शब्दांमृत®

(हिंदी)

भाग-३

विलास जैन

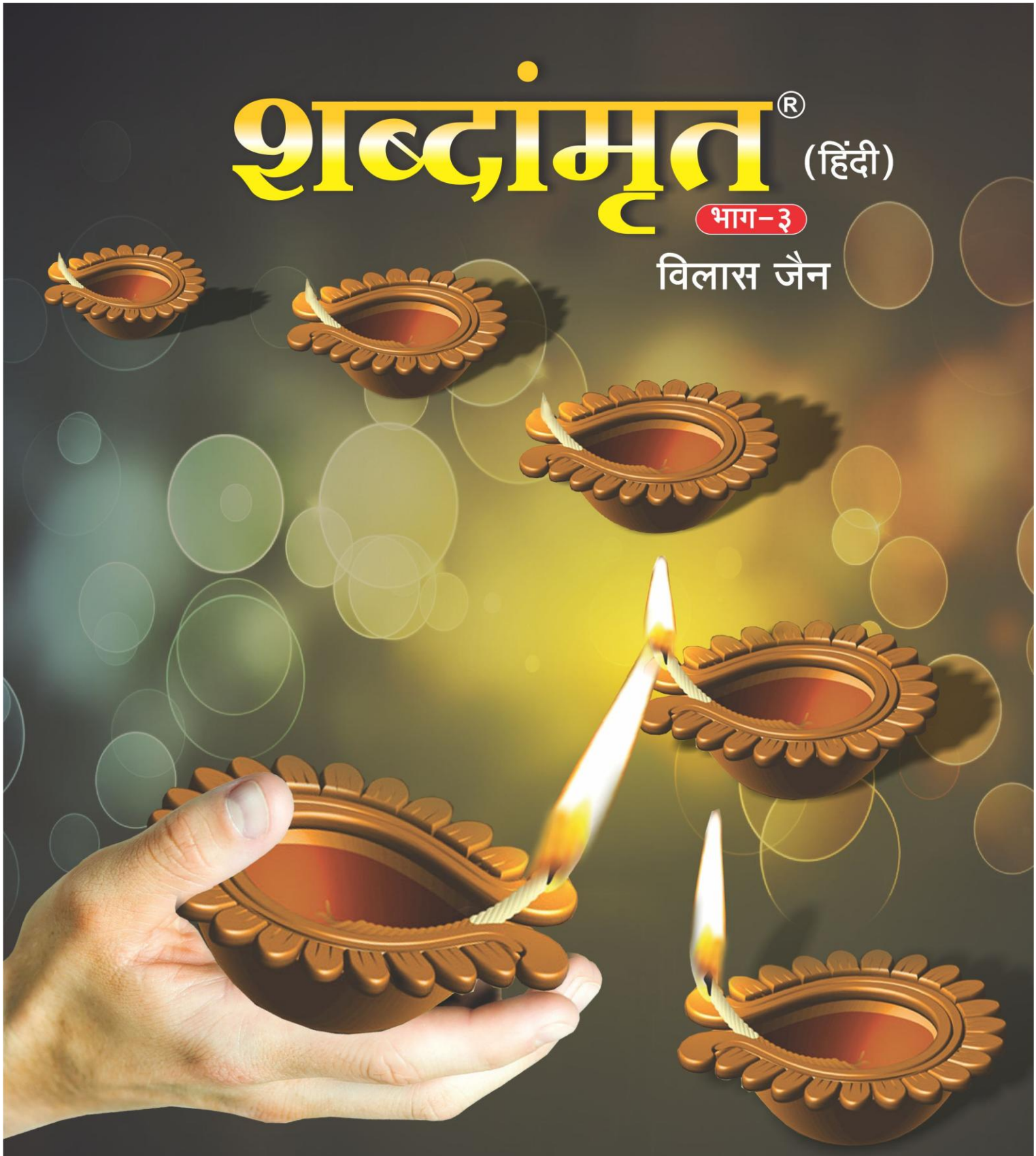

यह कार्य नही क्रांती है।

NEW ERA'S SELF HELP®

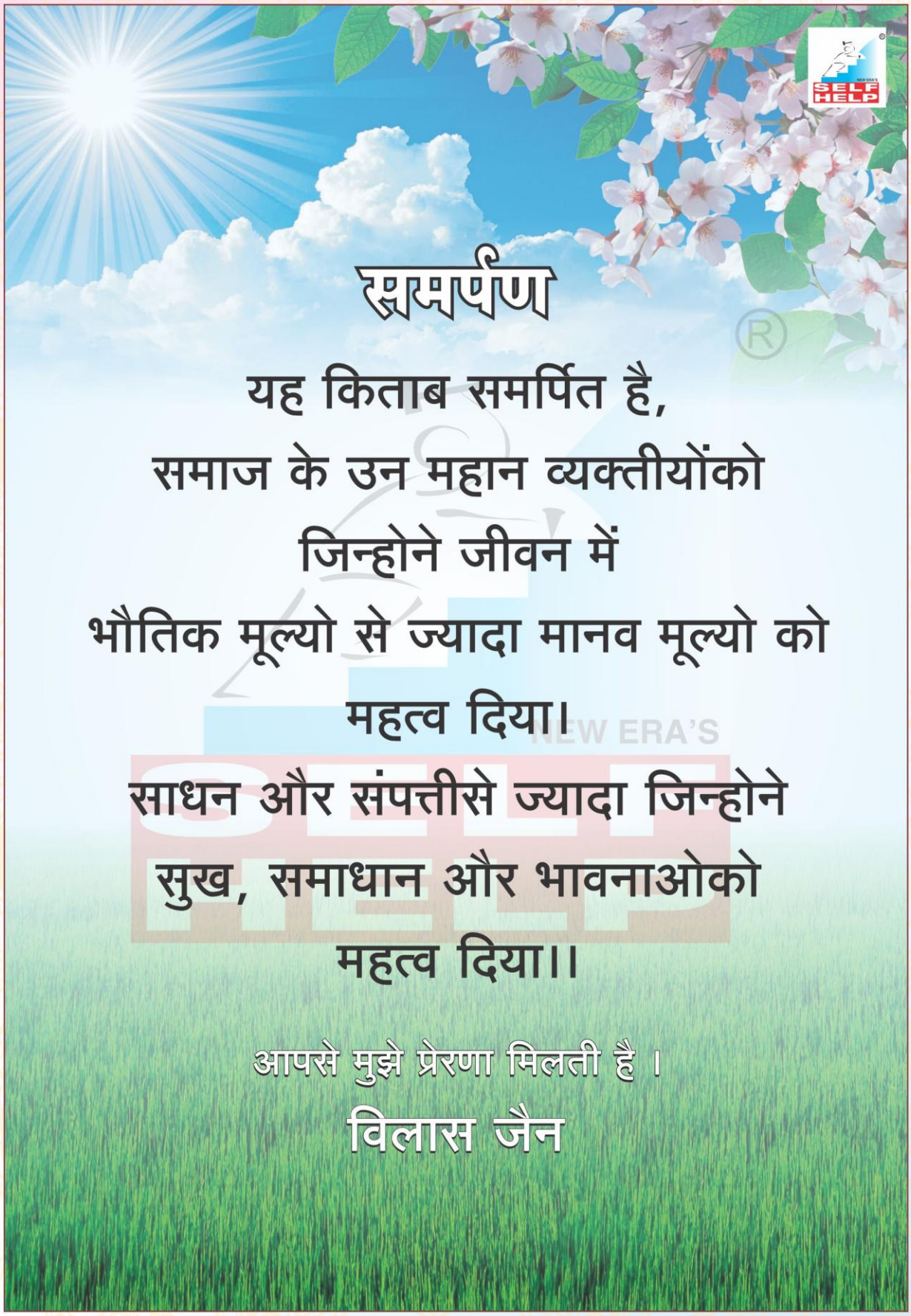

समर्पण

यह किताब समर्पित है,
समाज के उन महान व्यक्तीयोंको
जिन्होने जीवन में
भौतिक मूल्यो से ज्यादा मानव मूल्यो को
महत्व दिया।
साधन और संपत्तीसे ज्यादा जिन्होने
सुख, समाधान और भावनाओको
महत्व दिया।।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

अल्प परिचय –

विलास जैन

विलास जैन इनका जन्म एक छोटेसे गाँव मे हुआ। गाँव मे पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण उन्हे छोटी उम्र मे ही गाँव छोड़कर शहरमे पढ़ाई के लिये जाना पड़ा। उन्हे किसी का भी मार्गदर्शन न होते हुए भी उन्होने सन १९८८ मे पुणे शहरके एक नामांकित संस्थासे एम.बी.ए. (मार्केटींग) का अध्ययन पुरा किया। उसके बाद उन्होने अपना चिपकाने वाले पदार्थोका व्यवसाय शुरु किया। शुरु मे इन चिजोंके मार्केटींग का व्यवसाय किया फिर बादमे वही चिजोका खुद उत्पादन शुरु किया। उनका व्यक्तिमत्व बहुमुखी होने के कारण आज वह एक सफल दूरदर्षी उद्योजक है। उन्होने चिपकाने वाले पदार्थो मे छे नये संशोधन किये है। और अनेक उत्पादन खुद बनाये है। वह एक सफल उद्योजक, संशोधक, किसान, समाजकारणी, राजकारणी तो है ही, साथ मे एक उत्कृष्ट साहित्यीक भी है। उनका साहीत्य हिंदी एवं मराठी भाषामे है। संपुर्ण साहित्य समाजपयोगी, संस्कारीत करनेवाले, प्रेरणा देनेवाले, अध्यात्म का महत्व बतलानेवाले और नैतिक मूल्य बढ़ाने वाले है। उन्होने हिंदी एवं मराठी भाषामे बालकविताये, प्रेरणा कविताये, देशभक्तीपर कविता, दोहे, प्रेरक शायरी, सुविचार, भजन, जीवन दर्शन कवितायें, ग्रहोपर कविताये, समाज रचनापर कविताये, छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, मराठी गझल ऐसे अनेक विषयोंका एक बड़ा संग्रह तैयार किया हुआ है। उनकी अबतक पंधरह किताबे प्रकाशित हो चुकी है। उनका सामाजिक, राजकीय और अध्यात्मिक विषयोंका भरपूर अनुभव तथा गाँव और शहर के वातावरण मे बिताये हुये कई साल उनको अपने साहीत्य यात्रा मे बहोत ही उपयोगी साबित हुये है। प्रकृती से अधिक प्रेम होने के कारण उन्होंने आज तक हजारो वृक्ष लगाये है। और इस किताब से मिलनेवाली संपूर्ण राशी पर्यावरण कि सुरक्षितता में ही खर्च होगी इसका उन्होंने प्रण किया है।

शब्दांमृत® (हिंदी)

भाग-३

प्रकाशन : प्रथम

प्रकाशक : विलास जैन

लेखन : विलास जैन

प्रतिया :

अक्षरांकन : विलास जैन

निर्मिती : विलास जैन

मुद्रक :

New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Right Reserved 2020
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd. Company
Act 1956 Reg. No. U51909 MH2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित :

पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ कानूनी कारवाई की जायेगी।

प्रस्तावना

जिंदगी मे संघर्ष करते वक्त अनेक कविताये, कुछ शब्द समुह, सुविचार, शेरो शायरी या दोहे हमारी लढ़ने की शक्ति दुगनी कर देते है। हारती हुई बाजी जितने मे हमारी हौसला बढा कर अैसे साहित्य हमारे मददगार साबित होते है। अनेक मोड़ोपर यह हमे सही रास्ता दिखाते है। गुमराह होनेसे रोकते है, और हमे सही जीवन जीने की प्रेरणा देते है। मेरे भी जिंदगीमे ऐसे अनेक साहित्य मार्गदर्शक साबित हुये है। उसी से प्रेरणा लेकर मैने सोचा मै भी कुछ ऐसे शब्दसमुह तैय्यार करु जो समाजमे मल्हम, टॉनिक या मार्गदर्शक का काम करेगें। आजके इस सांस्कृतिक प्रदुषन के जमानेमे इन सब चीजो का महत्व पहलेसे ज्यादा बढ़ गया है। क्योकी अब हमे हमारे पथ से गुमराह करने के लिये टि.व्ही. हमारे घरमेही बैठा है। व्हॉटस् अप और फेसबुक द्वारा अब आसानीसे बिना किसीको मालुम किये अनेक असामाजिक बाते की जा सकती है। पहले हर किसीकी जिंदगी संस्कार, नितीमुल्य, आदर, शर्म और त्याग के धागोसे बंधी रहती थी। पर अब इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़िया के आगमन ने इन सभी धागोको तोड़ दिया है। अब हमे क्या खाना है, क्या पीना है, क्या पहनना है, कैसे दिखना है, कैसे बर्ताव करना, क्या खरीदना है, यह इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़ीया सिखाता है। इतना ही नही हमारे रिश्ते कैसे हो वो भी कई धारावाहीको द्वारा हमारे अवचेतन मन मे बिठाने का काम हो रहा है। मुझे आशा है के इस किताबमे से कुछ कविताये, आपको गुमराह होनेसे रोक सकती है। अगर आप टूट चुके हो, हार चुके हो तो इसमेसे कुछ कविताये आपके लिये संजीवनिका काम कर सकती है। अगर आपको इस किताबसे कुछ लाभ हुआ तो मेरा लिखना सार्थक होगा।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है

विलास जैन

शब्दांमृत® (हिंदी)

भाग-३

सूची

अ.क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.	अ.क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
१.	मकडी का जाल	... १	१५.	बचपन	... १५
२.	आजा मेरी और	... २	१६.	उड गये पंछी	... १६
३.	आँखे नम है	... ३	१७.	श्रृंगार	... १७
४.	भुला रास्ता	... ४	१८.	नवविवाह	... १८
५.	आवो फिरसे मिलले	... ५	१९.	एतबार	... १९
६.	मेरा परिचय	... ६	२०.	समबंध	... २०
७.	उत्साह उमंग	... ७	२१.	मनमानी	... २१
८.	दोहरे मापदंड	... ८	२२.	दिल चाहता है	... २२
९.	भुल जायेंगे	... ९	२३.	गम	... २३
१०.	मेरे घोसले मे	... १०	२४.	मै कसाई कि गाय	... २४
११.	फुर्सत नही	... ११	२५.	प्रार्थना	... २५
१२.	संग	... १२	२६.	संभावना बाकी है	... २६
१३.	बहना है	... १३	२७.	मौत का इंतजार	... २७
१४.	तकदीर	... १४	२८.	चाहीये ऐसा कोई	... २८

मकडी का जाल

फंसा हुआ हुँ मै
मकडीके ऐसे जाल में
निकल नही सकता बाहर
चाहु गर हर हाल में

अजीबो गरीब कशमकश
जाल तुटनेका है डर
नियती का खेल देखो
जाल मुझपर निर्भर

घुट घुट कर जिना है
मरे आज या कटे उमर
आँखे तक रही मेरी
दिखे प्यार के दो प्रहर

जाल जला चुकी आशाये
ताकद भि झुलसाई है
साँसे कर्तव्योंकी धागो से बंधी
क्षण क्षण जिवन बढाती है

चाहत है नियती के
इस जाल से छूट जाये
या तो जानेवाली साँस
फिर लौटके ना आये

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

आजा मेरी और

चल पडा हुँ मध्यान से
मै अब अस्त कि और
दिख रहे है मुझे यहाँसे
उगम और विलय दोनो छोर

जन्म से मृत्यु का पथ
जाता सिर्फ एक हि और
रुकना, पिछे मुडना, घुमजाना
नही नियती को मंजुर

धिमी हुई तपन अब जिवन की
शिथील हुये इंद्रियोंके जोर
रिश्तो कि गर्मी कम हुई
विरने लगे संबंधो के शोर

लुटा कहाँ अभी आनंद मैने
नाचा कहाँ अभी मन मोर
विराम अभी ज्यादा दुर नही
सोच कर हो रहा भाव विभोर

चलने को मजबुर इस राह पर
खिंच रहा कोई बाधें डोर
दुर बैठे मृत्यु कह रहा
अब आ भी जाओ मेरी और

विलास जैन

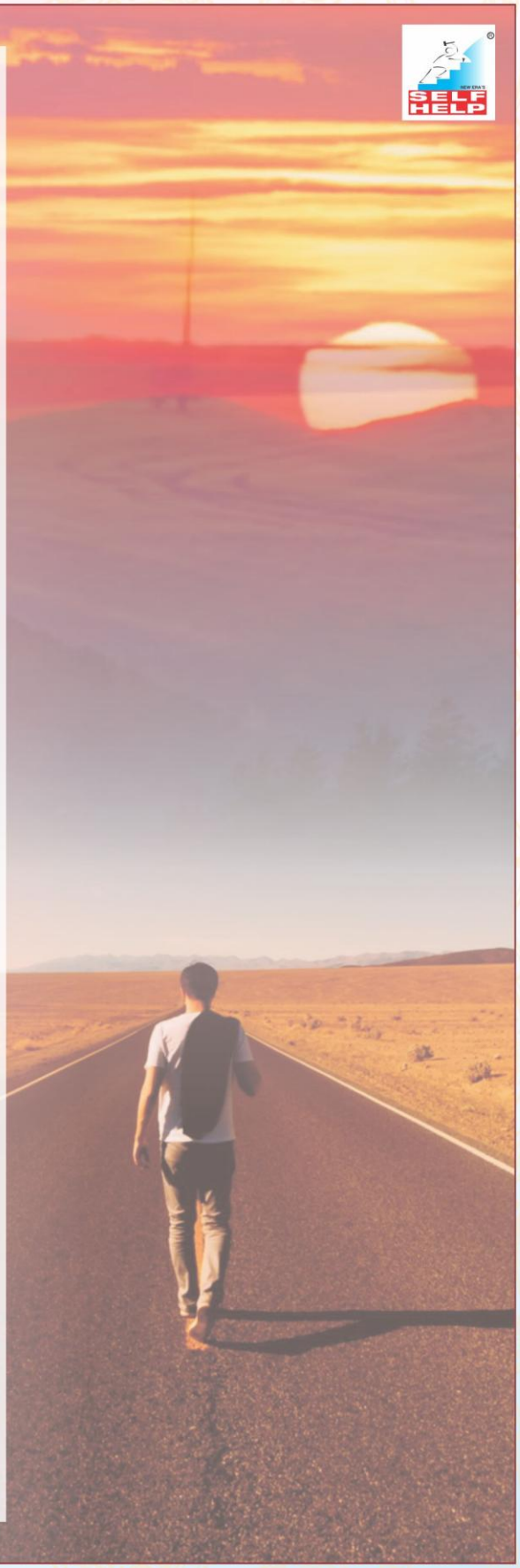

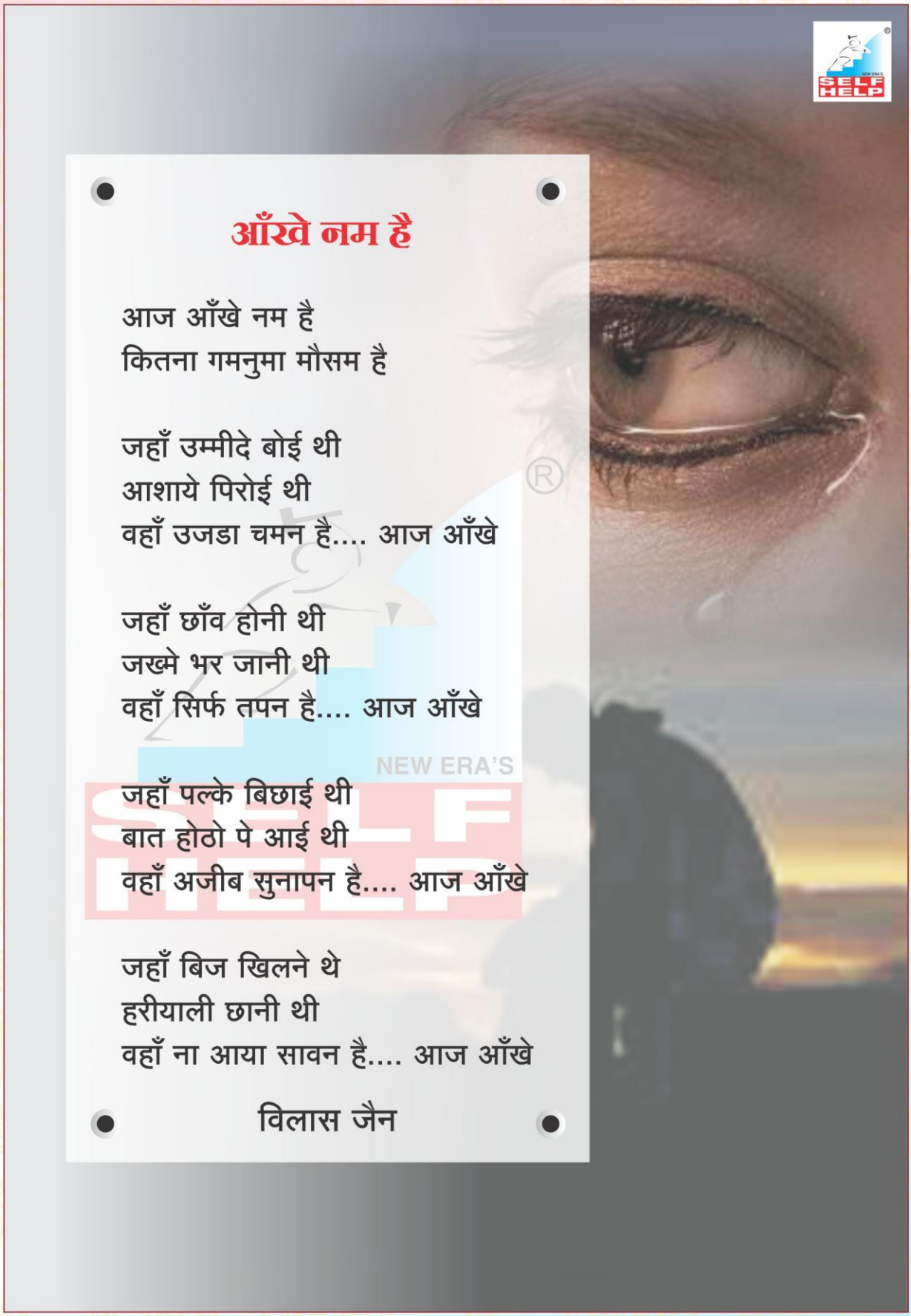

आँखे नम है

आज आँखे नम है
कितना गमनुमा मौसम है

जहाँ उम्मीदे बोई थी
आशाये पिरोई थी
वहाँ उजडा चमन है.... आज आँखे

जहाँ छाँव होनी थी
जख्मे भर जानी थी
वहाँ सिर्फ तपन है.... आज आँखे

जहाँ पल्के बिछाई थी
बात होठो पे आई थी
वहाँ अजीब सुनापन है.... आज आँखे

जहाँ बिज खिलने थे
हरीयाली छानी थी
वहाँ ना आया सावन है.... आज आँखे

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

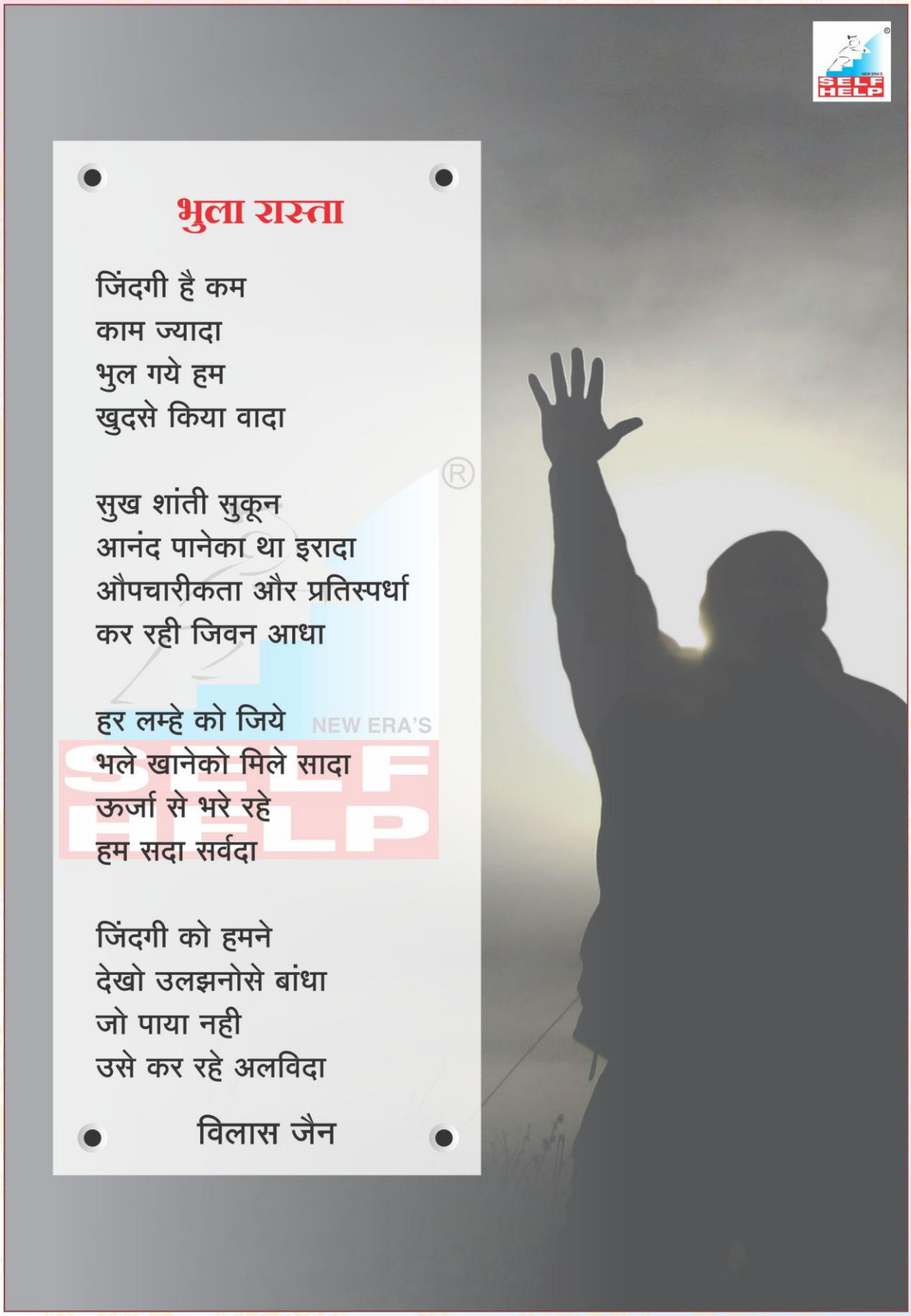

भुला रास्ता

जिंदगी है कम
काम ज्यादा
भुल गये हम
खुदसे किया वादा

सुख शांती सुकून
आनंद पानेका था इरादा
औपचारीकता और प्रतिस्पर्धा
कर रही जिवन आधा

हर लम्हे को जिये
भले खानेको मिले सादा
ऊर्जा से भरे रहे
हम सदा सर्वदा

जिंदगी को हमने
देखो उलझनोसे बांधा
जो पाया नही
उसे कर रहे अलविदा

विलास जैन

NEW ERA'S
SELF
HELP

आवो फिरसे मिलले

आवो फिरसे मिलले
कुछ अपनी कहले
कुछ आपकी सुनले

गुणवत्ता पर अपनी
फिरसे नजर गडाले
एक गुणवत्ता पुर्ण दोस्तीका
हम इतिहास रचले

साथ चलनेसे ही जिंदगी
आसान होगी समजले
एक अतुट रिश्ते की
हम निव डालले

नये तरहसे जिनेकी
आओ योजनाये बनाले
नई खोज नई बाते
नये दोस्त बनाले

कौन जी रहा सही
कौन गलत जानले
निरंतर अतुट सेवा का
व्रत दिलमे धरले

भव्य दिव्य जिवनके
सुंदर सपने सजाले
साथ रहकर कुछ देर
चलो आत्मबल बढाले

विलास जैन

मेरा परिचय

धुवाँ बन उड जाऊँगा
राख बन बिखर जाऊँगा
कुछ देर दिलोमें रहकर तुम्हारे
मै इस जहाँसे गुजर जाऊँगा

विषमताओ को क्षमताओसे जीतनेका
राज मै लिख जाऊँगा
जब जब आयेगा पतझड
मै बहारोंकी याद दिलाऊँगा

नश्वर काया पर क्या इतराऊँ
क्षण मे आँखो से ओझल हो जाऊँगा
जो दिया है इस जहाँने
उसे सुत समेत लौटाऊँगा

औकात, हिम्मत, ताकद, दौलत
ना कोई यहाँ अमर बनायेगा
सद्भावना, सदगुण, संवेदना, सर्मपन
बस इनसेही काम चलाऊँगा

नही कोई पता और परिचय मेरा
बस एक अच्छा आदमी कहलाऊँगा
जब भी आयेगा बुलावा उसका
गोदी मे उसके छुपके सो जाऊँगा

विलास जैन

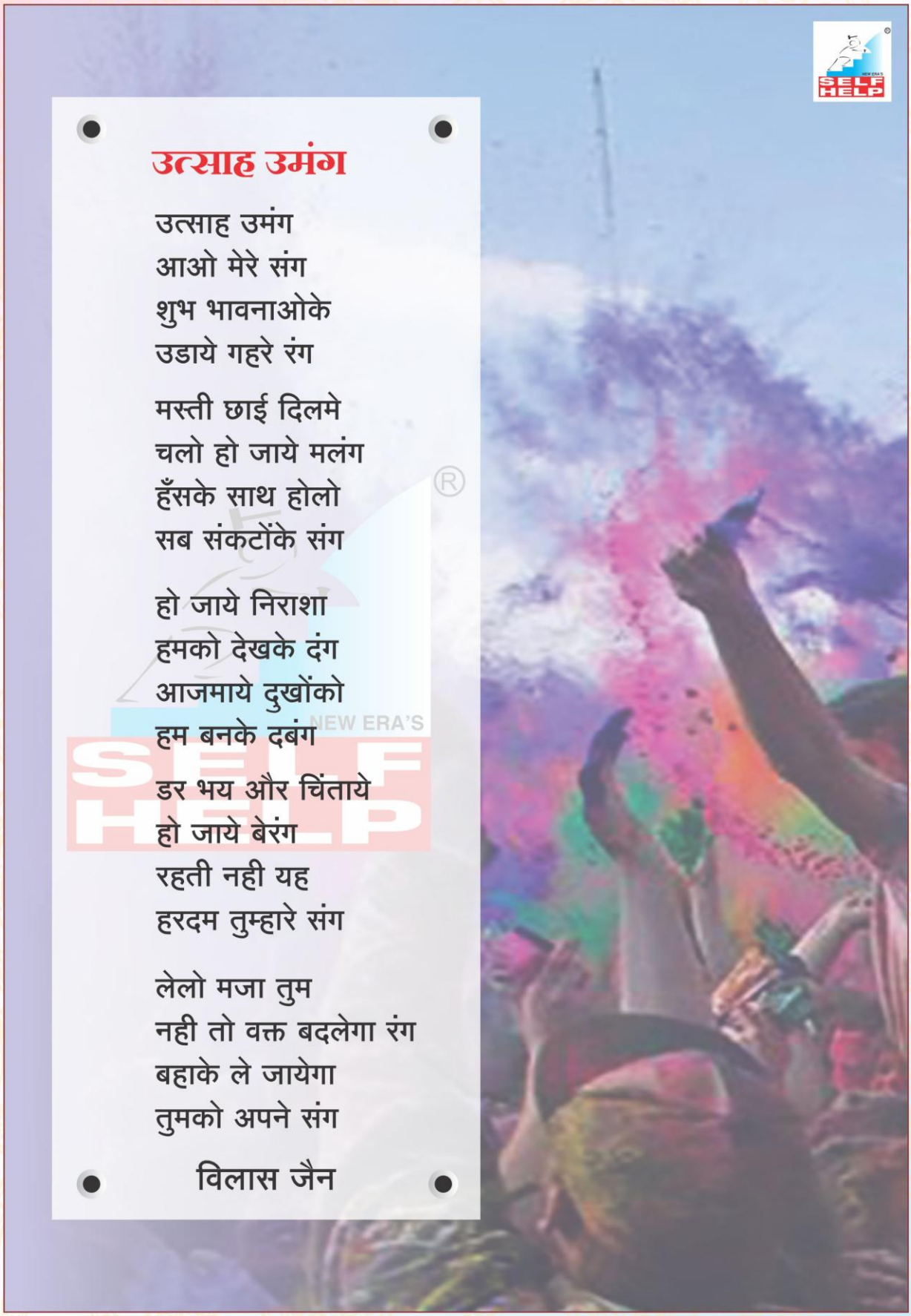

उत्साह उमंग

उत्साह उमंग
आओ मेरे संग
शुभ भावनाओके
उडाये गहरे रंग

मस्ती छाई दिलमे
चलो हो जाये मलंग
हँसके साथ होलो
सब संकटोंके संग

हो जाये निराशा
हमको देखके दंग
आजमाये दुखोंको
हम बनके दबंग

डर भय और चिंताये
हो जाये बेरंग
रहती नही यह
हरदम तुम्हारे संग

लेलो मजा तुम
नही तो वक्त बदलेगा रंग
बहाके ले जायेगा
तुमको अपने संग

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

दोहरे मापदंड

दोहरे मापदंड को जिवनमे
मैने बना लिया अपना
मानव मुल्य लगते है
अब मुझे सपना

दुर्दशा पे अपने मैने
सिख लिया हँसना
मानवता भुलना चाहता हुँ
हो सके उतना

शिष्टाचार और स्वैराचार है
आज जिनेका अफसाना
सदाचार और सुविचारो को
कहता जमाना दिवाना

उलझे हुये संबंधोके रस
चुसता आज यह जमाना
बस मे नही इनके आज
होश मे जीना

विलास जैन

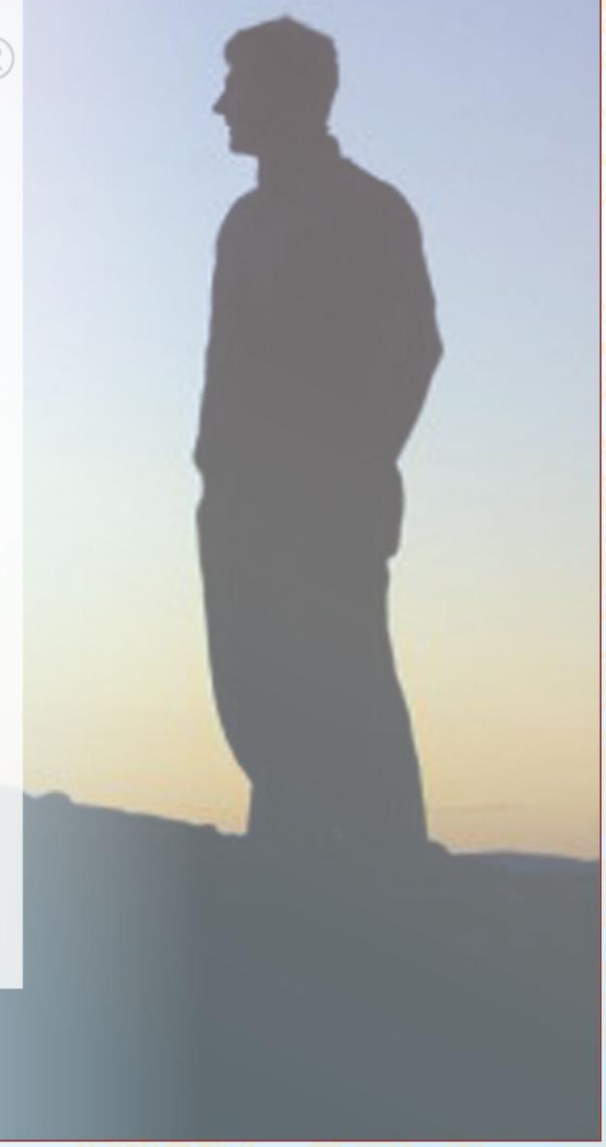

भुल जायेंगे

जिन कदमो को हमने
चलना सिखाया था
वो ही जब ठुकरायेंगे
हम चलना भुल जायेंगे

जिन हाथोंको हमने
गिरते वक्त थामा था
वो हि जब हाथ छुडायेंगे
हम साथ देना भुल जायेंगे

जिन आँखोको हमने
सपना देखना सिखाया था
वो हि जब आँख चुरायेंगे
हम अपने ही आँखोमे गिर जायेंगे

जिस व्यक्तित्व को हमने
खुन पसिनेसे सिंचा था
वो ही जब बेगाना बनायेंगे
हम जिना भुल जायेंगे

जिस तुतलाते ओठोंको हमने
बोलना सिखाया था
वो ही जब हमको कोसेंगे
हम बोलना भुल जायेंगे

जिस दिल को हमने
धडकना सिखाया था
वो ही जब हमारी मरनेकी राह देखेंगे
हम अपने जिवनपे पछतायेंगे

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

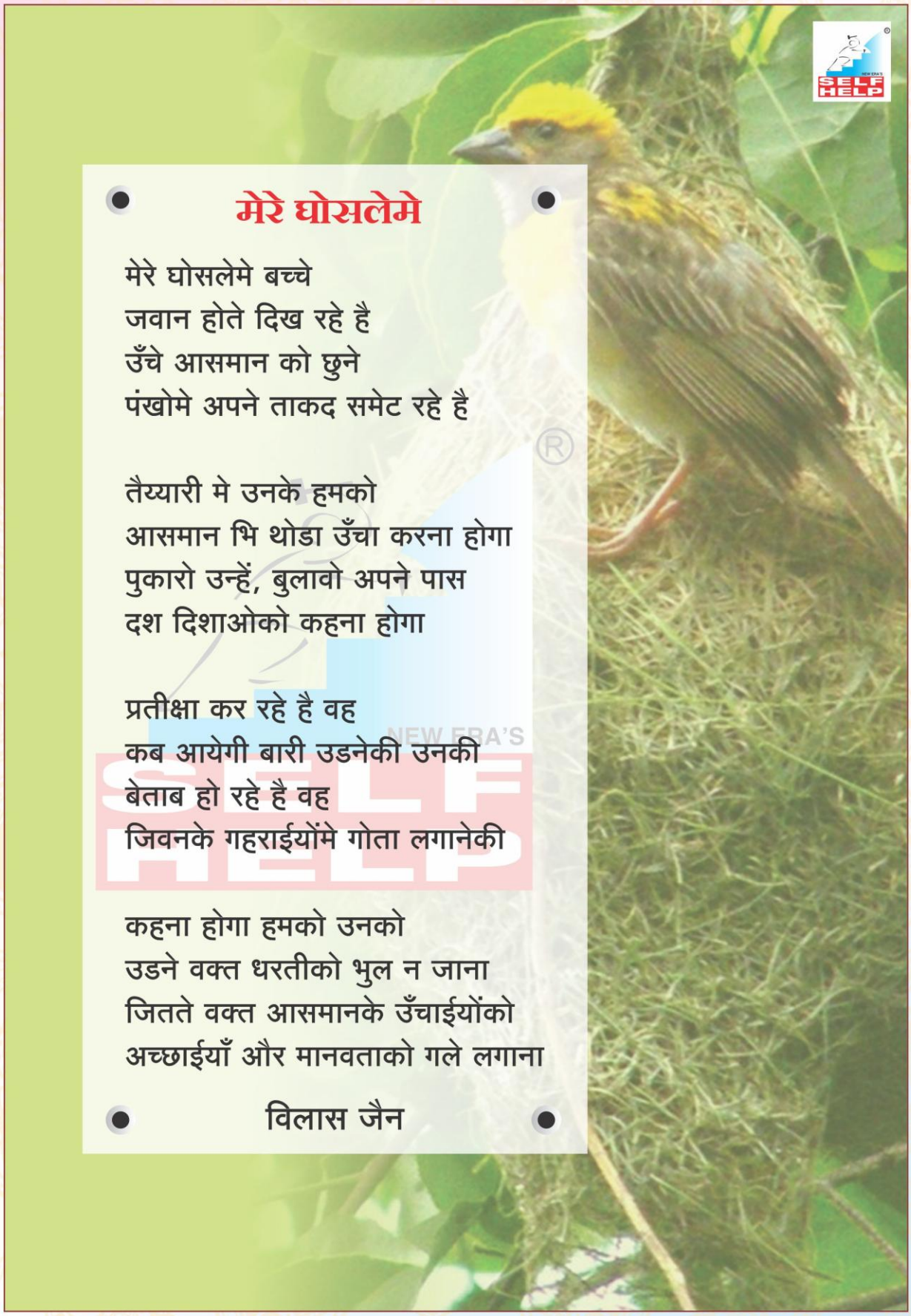

मेरे घोसलेमे

मेरे घोसलेमे बच्चे
जवान होते दिख रहे है
उँचे आसमान को छुने
पंखोमे अपने ताकद समेट रहे है

तैय्यारी मे उनके हमको
आसमान भि थोडा उँचा करना होगा
पुकारो उन्हें, बुलावो अपने पास
दश दिशाओको कहना होगा

प्रतीक्षा कर रहे है वह
कब आयेगी बारी उडनेकी उनकी
बेताब हो रहे है वह
जिवनके गहराईयोंमे गोता लगानेकी

कहना होगा हमको उनको
उडने वक्त धरतीको भुल न जाना
जितते वक्त आसमानके उँचाईयोंको
अच्छाईयाँ और मानवताको गले लगाना

विलास जैन

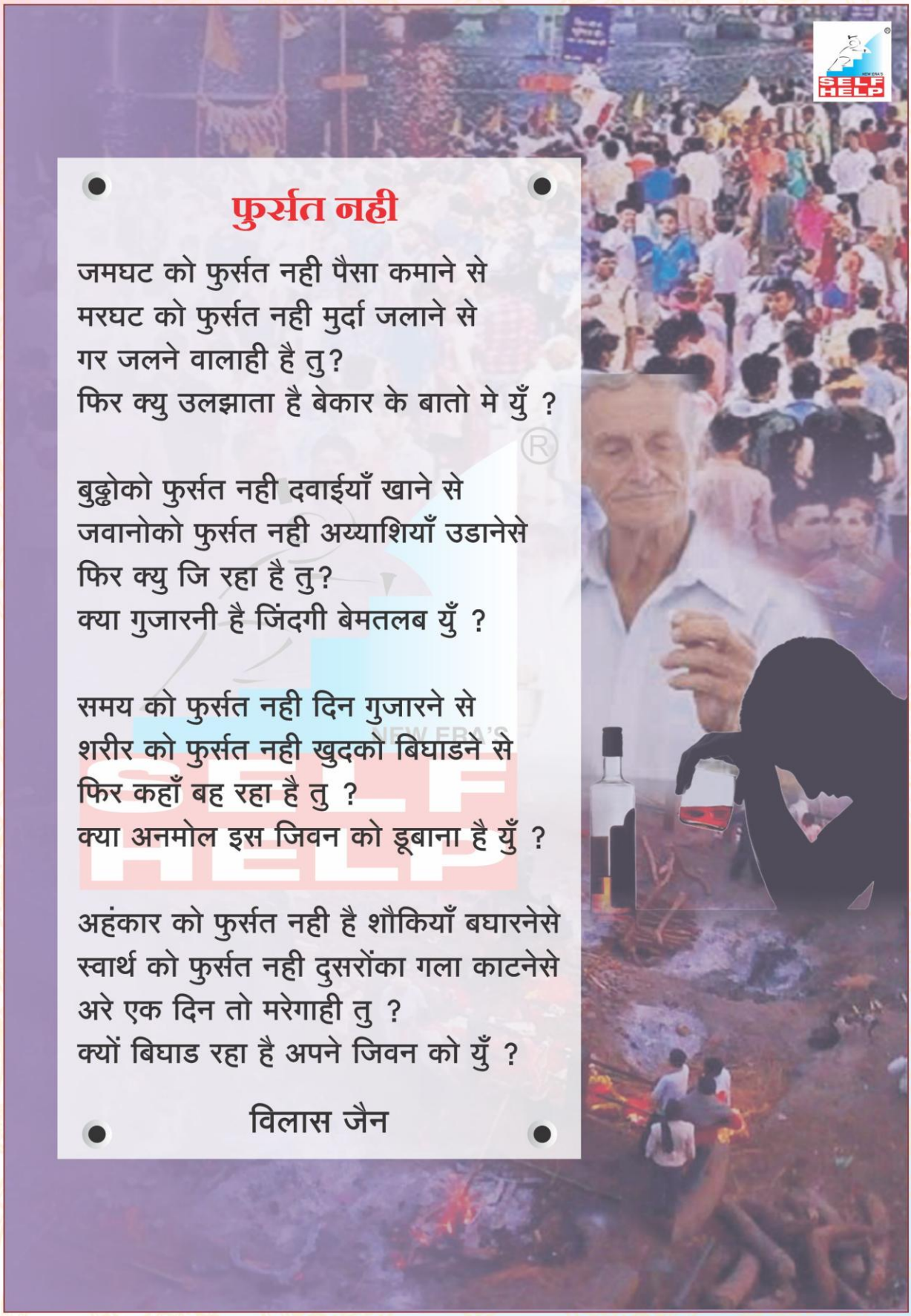

फुर्सत नही

जमघट को फुर्सत नही पैसा कमाने से
मरघट को फुर्सत नही मुर्दा जलाने से
गर जलने वालाही है तु?
फिर क्यु उलझाता है बेकार के बातो मे युँ ?

बुढ्ढोको फुर्सत नही दवाईयाँ खाने से
जवानोको फुर्सत नही अय्याशियाँ उडानेसे
फिर क्यु जि रहा है तु?
क्या गुजारनी है जिंदगी बेमतलब युँ ?

समय को फुर्सत नही दिन गुजारने से
शरीर को फुर्सत नही खुदको बिघाडने से
फिर कहाँ बह रहा है तु ?
क्या अनमोल इस जिवन को डूबाना है युँ ?

अहंकार को फुर्सत नही है शौकियाँ बघारनेसे
स्वार्थ को फुर्सत नही दुसरोंका गला काटनेसे
अरे एक दिन तो मरेगाही तु ?
क्यों बिघाड रहा है अपने जिवन को युँ ?

विलास जैन

संग

वो रिमझिम साँवन ही था
जब आई थी तुम मेरी आँगन मे
नन्हे नन्हे दो फुल खिलाये है
चलते चलते जिवन के बगियाँमे

मुसलाधार बारीश के थपेडोने
जब अरमान सारे धो डाले थे
उसी बारीश मे प्रेमके बिज बो कर
तुमने नये सपने जगाये थे

जाडोका मौसम आया
ठिठरा देनेवाली सर्द हवा साथ लाया
चाहत और अपनत्व के गर्मीके आगे तुम्हारे
वह भि अपना असर नही दिखा पाया

वसंत आया पतझड लाया
देखो साथ तुमने खुब निभाया
ग्रिष्म ऋतुने जब मुझको जलाया
तुमनेही दि थी मुझको छाया

ऋतुओकी और जिवनकी विषमता सहती
मंडराती है तुम मेरे आस पास
परछाई के जैसे साथ निभाती
फिर भि रहती है मुझको तुम्हारी आस

विलास जैन

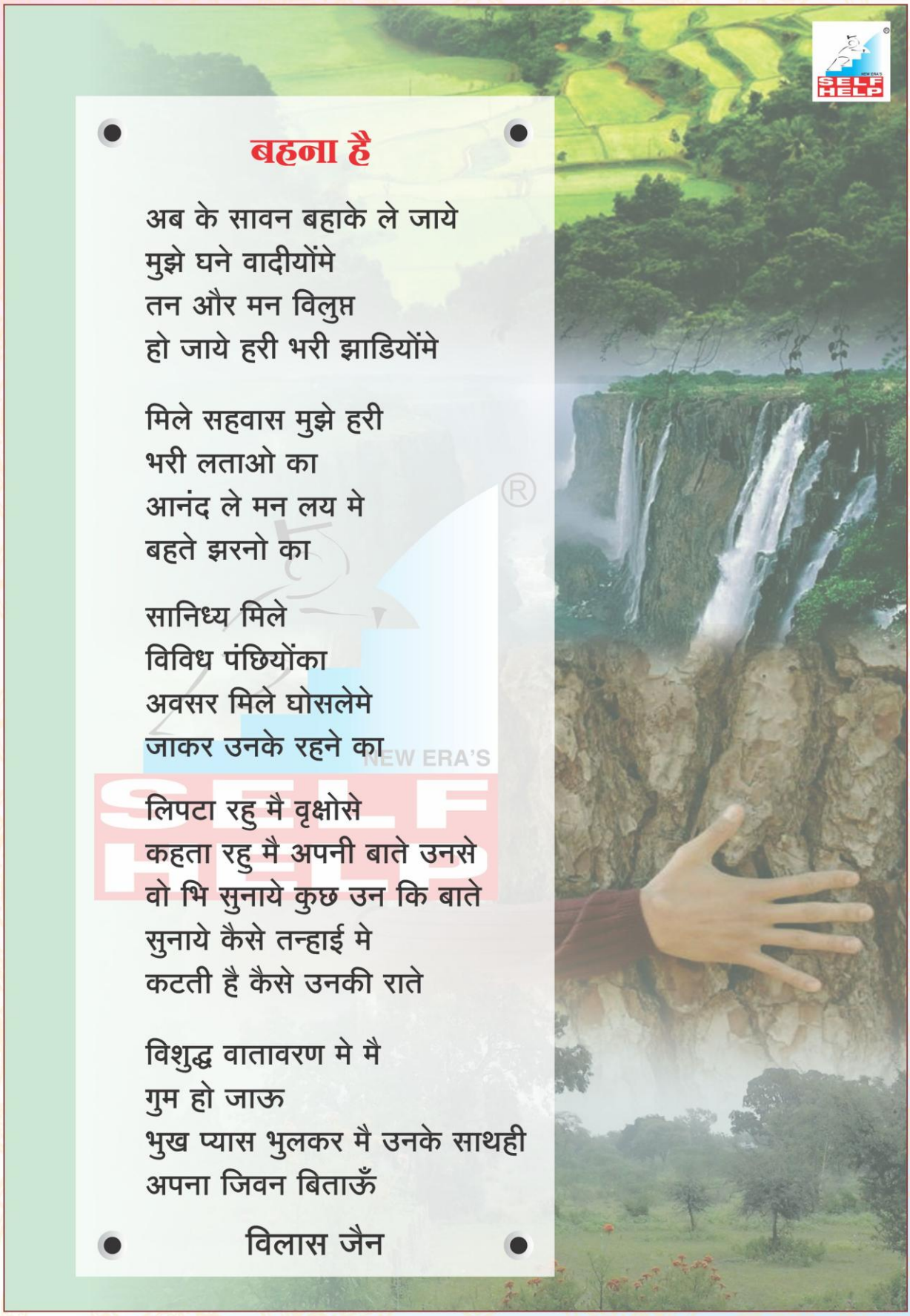

बहना है

अब के सावन बहाके ले जाये
मुझे घने वादीयोंमे
तन और मन विलुप्त
हो जाये हरी भरी झाडियोंमे

मिले सहवास मुझे हरी
भरी लताओ का
आनंद ले मन लय मे
बहते झरनो का

सानिध्य मिले
विविध पंछियोंका
अवसर मिले घोसलेमे
जाकर उनके रहने का

लिपटा रहु मै वृक्षोसे
कहता रहु मै अपनी बाते उनसे
वो भि सुनाये कुछ उन कि बाते
सुनाये कैसे तन्हाई मे
कटती है कैसे उनकी राते

विशुद्ध वातावरण मे मै
गुम हो जाऊ
भुख प्यास भुलकर मै उनके साथही
अपना जिवन बिताऊँ

विलास जैन

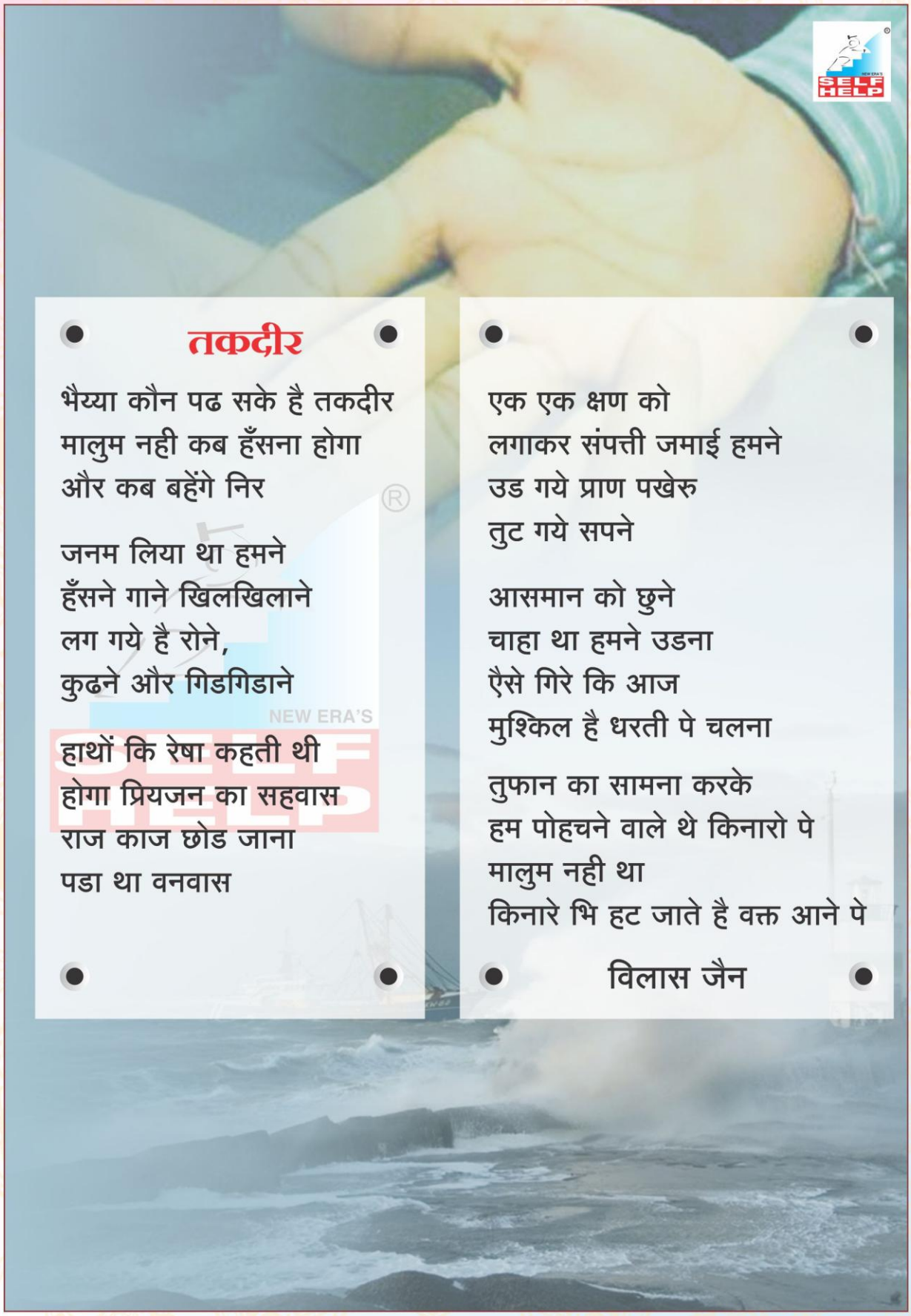

तकदीर

भैय्या कौन पढ सके है तकदीर
मालुम नही कब हँसना होगा
और कब बहेंगे निर

जनम लिया था हमने
हँसने गाने खिलखिलाने
लग गये है रोने,
कुढने और गिडगिडाने

हाथों कि रेषा कहती थी
होगा प्रियजन का सहवास
राज काज छोड जाना
पडा था वनवास

एक एक क्षण को
लगाकर संपत्ती जमाई हमने
उड गये प्राण पखेरु
तुट गये सपने

आसमान को छुने
चाहा था हमने उडना
ऐसे गिरे कि आज
मुश्किल है धरती पे चलना

तुफान का सामना करके
हम पोहचने वाले थे किनारो पे
मालुम नही था
किनारे भि हट जाते है वक्त आने पे

विलास जैन

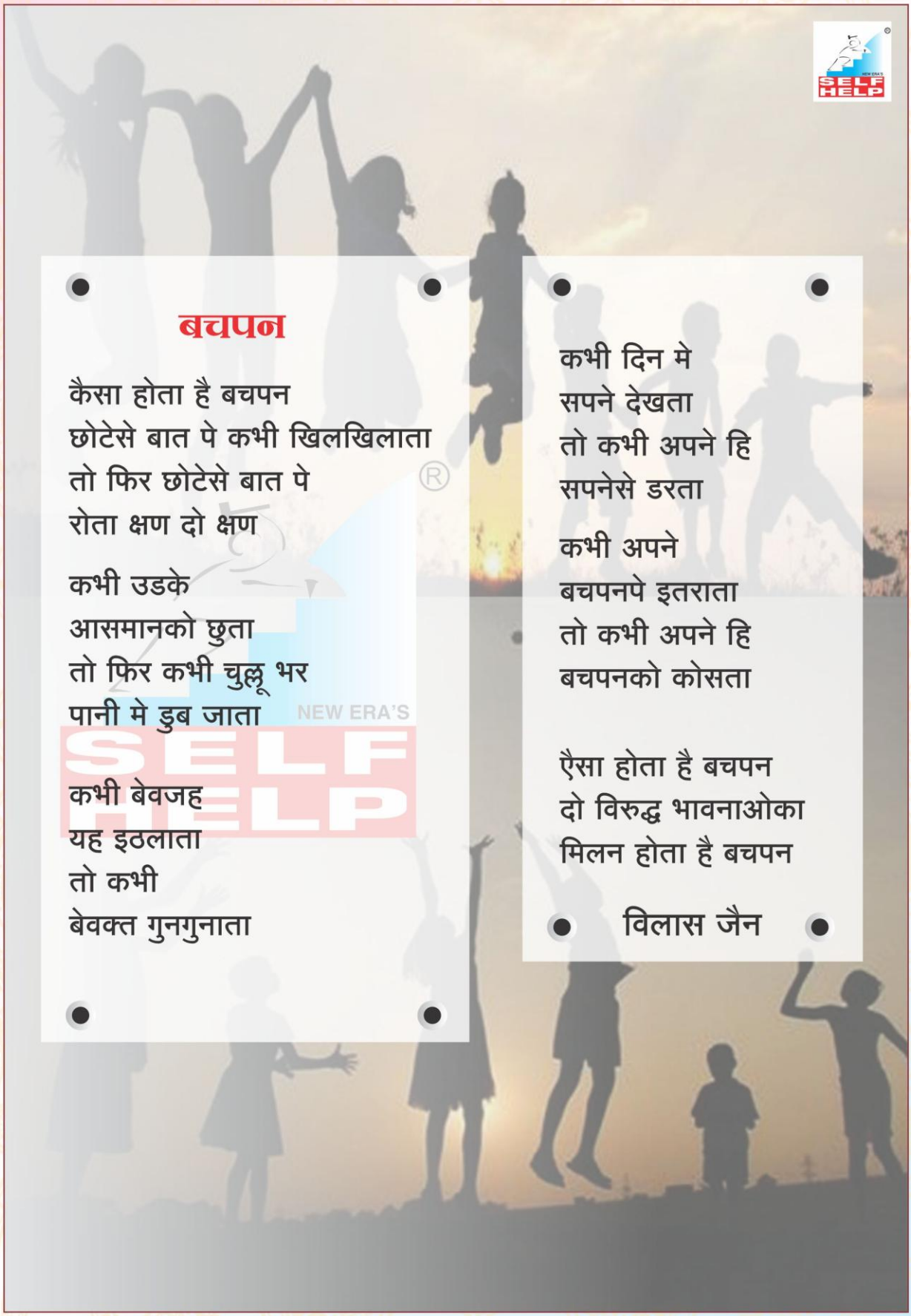

बचपन

कैसा होता है बचपन
छोटेसे बात पे कभी खिलखिलाता
तो फिर छोटेसे बात पे
रोता क्षण दो क्षण

कभी उडके
आसमानको छुता
तो फिर कभी चुल्लू भर
पानी मे डुब जाता

कभी बेवजह
यह इठलाता
तो कभी
बेवक्त गुनगुनाता

कभी दिन मे
सपने देखता
तो कभी अपने हि
सपनेसे डरता

कभी अपने
बचपनपे इतराता
तो कभी अपने हि
बचपनको कोसता

ऐसा होता है बचपन
दो विरुद्ध भावनाओका
मिलन होता है बचपन

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

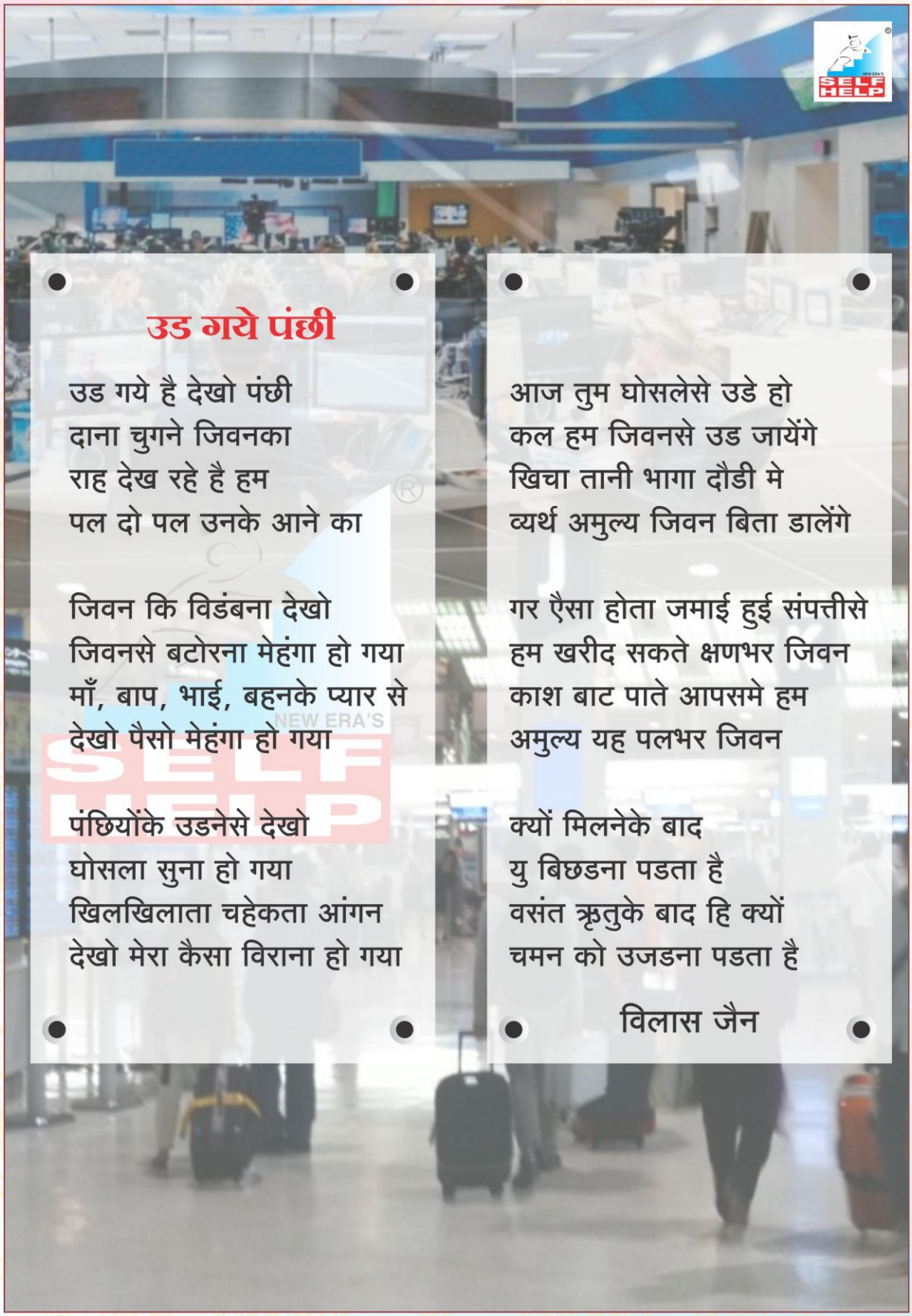

उड गये पंछी

उड गये है देखो पंछी
दाना चुगने जिवनका
राह देख रहे है हम
पल दो पल उनके आने का

जिवन कि विडंबना देखो
जिवनसे बटोरना मेहंगा हो गया
माँ, बाप, भाई, बहनके प्यार से
देखो पैसो मेहंगा हो गया

पंछियोंके उडनेसे देखो
घोसला सुना हो गया
खिलखिलाता चहेकता आंगन
देखो मेरा कैसा विराना हो गया

आज तुम घोसलेसे उडे हो
कल हम जिवनसे उड जायेंगे
खिचा तानी भागा दौडी मे
व्यर्थ अमुल्य जिवन बिता डालेंगे

गर ऐसा होता जमाई हुई संपत्तीसे
हम खरीद सकते क्षणभर जिवन
काश बाट पाते आपसमे हम
अमुल्य यह पलभर जिवन

क्यों मिलनेके बाद
यु बिछडना पडता है
वसंत ऋतुके बाद हि क्यों
चमन को उजडना पडता है

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

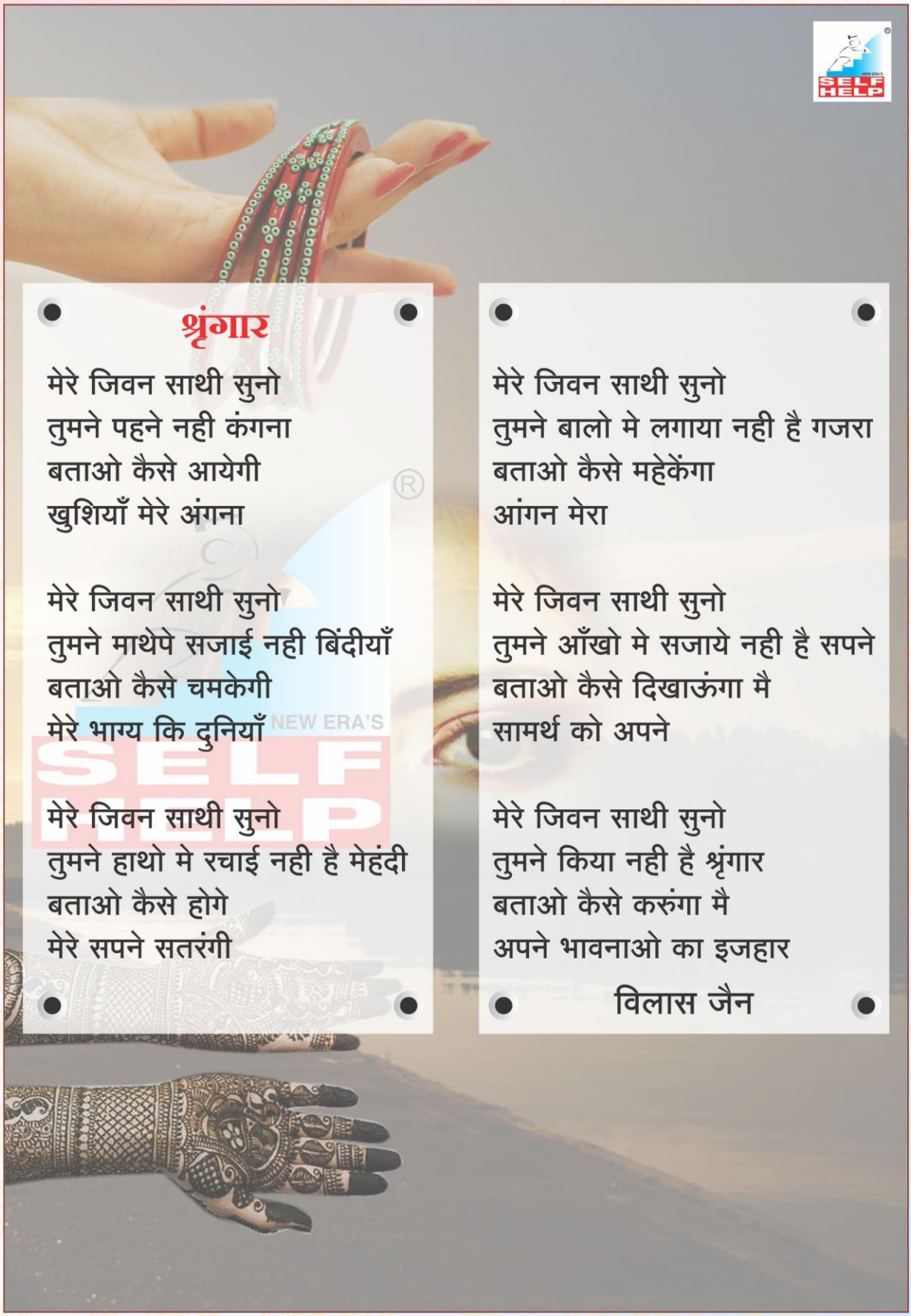

श्रृंगार

मेरे जिवन साथी सुनो
तुमने पहने नही कंगना
बताओ कैसे आयेगी
खुशियाँ मेरे अंगना

मेरे जिवन साथी सुनो
तुमने माथेपे सजाई नही बिंदीयाँ
बताओ कैसे चमकेगी
मेरे भाग्य कि दुनियाँ

मेरे जिवन साथी सुनो
तुमने हाथो मे रचाई नही है मेहंदी
बताओ कैसे होगे
मेरे सपने सतरंगी

मेरे जिवन साथी सुनो
तुमने बालो मे लगाया नही है गजरा
बताओ कैसे महेकेंगा
आंगन मेरा

मेरे जिवन साथी सुनो
तुमने आँखो मे सजाये नही है सपने
बताओ कैसे दिखाऊंगा मै
सामर्थ को अपने

मेरे जिवन साथी सुनो
तुमने किया नही है श्रृंगार
बताओ कैसे करुंगा मै
अपने भावनाओ का इजहार

विलास जैन

नव विवाह

आवो फिरसे विवाह रचायेंगे
भुलो वो लफडे झगडे
जो अज्ञानता वश हमने रचाये थे
चलो थांबे हाथ भव्यता का
सच करे सपने जो हमने सजाये थे

आवो मन और तन को निर्मल बनायेंगे
संबंधो का हर कोना चमकायेंगे
रिश्तो के नई गहराईमे
फिरसे गोता लगायेंगे

हमारा हर दिन होगा मधुचंद्र
हर रात को सुहागरात मनायेंगे
इस जिवनको हम एक
अनोखा उत्सव बनायेंगे

ठहरी हुई पुरानी भावनाओके
जलाशय को आज हम बहायेंगे
नित नई भावनाओके लिये
नया बांध बंधवायेंगे
आवो फिरसे विवाह रचायेंगे

विलास जैन

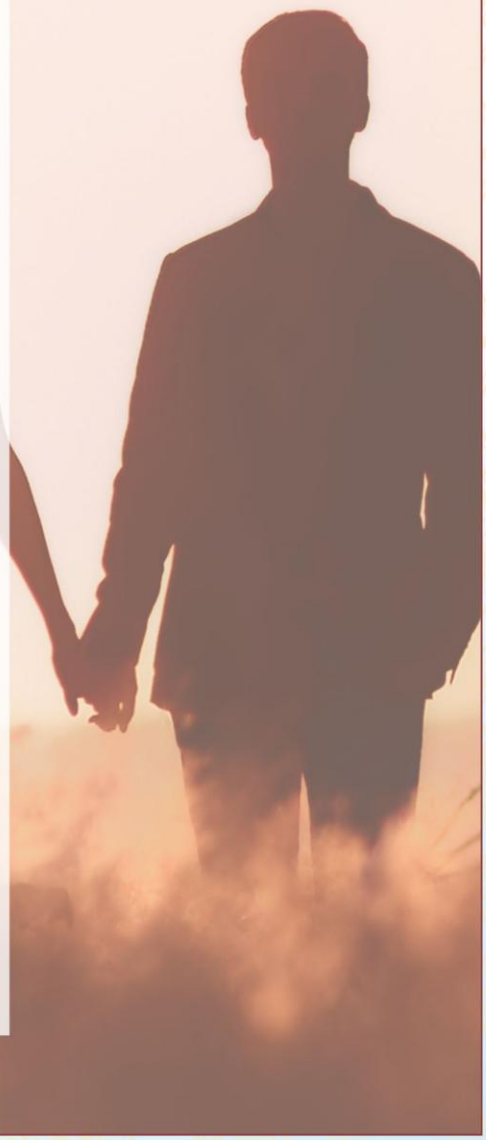

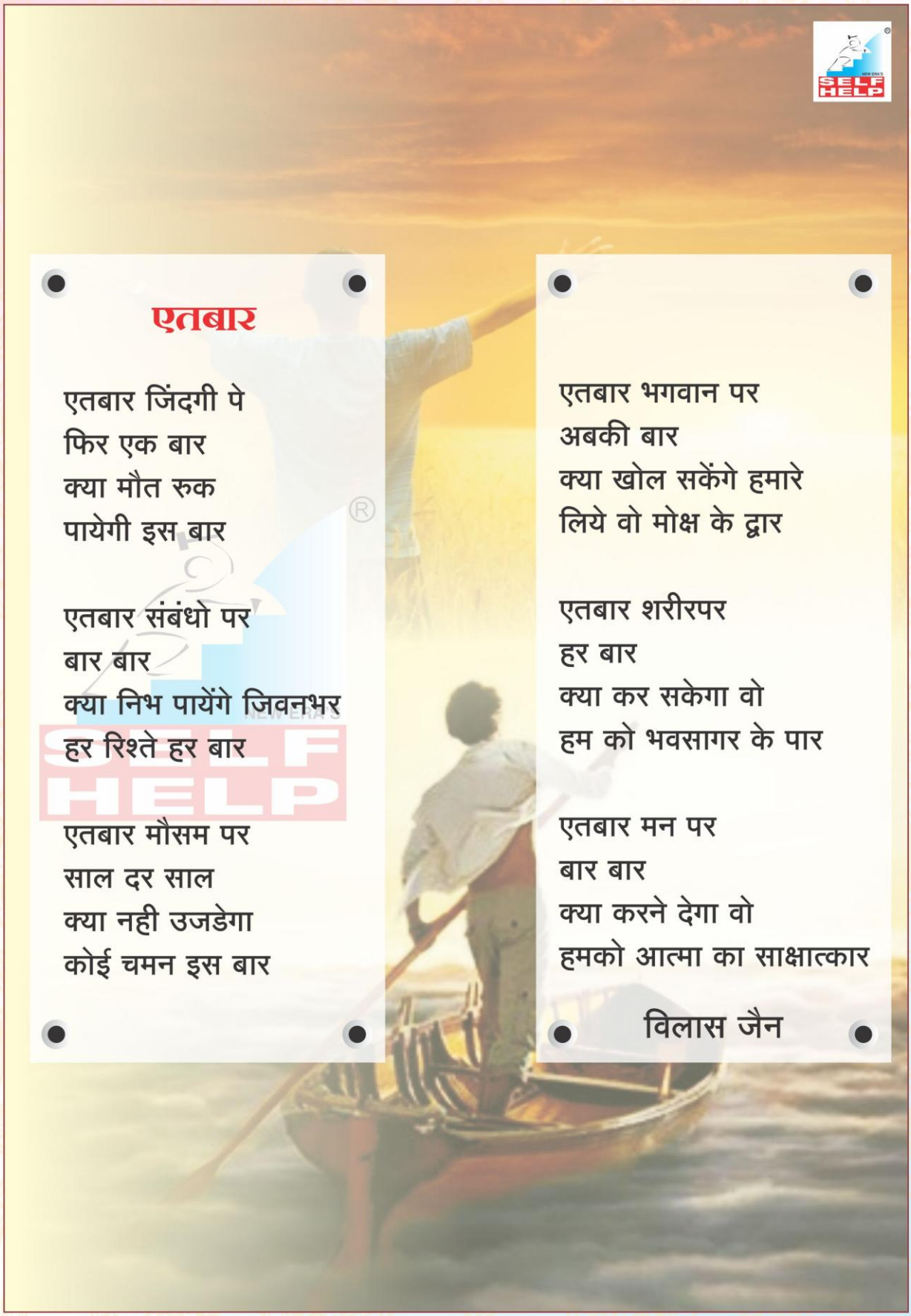

NEW ERA'S SELF HELP

एतबार

एतबार जिंदगी पे
फिर एक बार
क्या मौत रुक
पायेगी इस बार

एतबार संबंधो पर
बार बार
क्या निभ पायेंगे जिवनभर
हर रिश्ते हर बार

एतबार मौसम पर
साल दर साल
क्या नही उजडेगा
कोई चमन इस बार

एतबार भगवान पर
अबकी बार
क्या खोल सकेंगे हमारे
लिये वो मोक्ष के द्वार

एतबार शरीरपर
हर बार
क्या कर सकेगा वो
हम को भवसागर के पार

एतबार मन पर
बार बार
क्या करने देगा वो
हमको आत्मा का साक्षात्कार

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

समबंध

सम बंध मे बंधे
संसार डगर के हम दो राही
न जाने कहाँ से आये और
कहाँ है हमारी मंझिल

साथ चले है पर मालुम नही
है किसको कितना चलना
आवो मेरे हमसफर इस पल को
ही बनाये सुहाना

काम, क्रोध, मोह और अज्ञानता
होंगे हमारी राहो मे
चलते चलते चरीत्र, ज्ञान और
विवेक को भि समेटना होगा बाहो मे

न जाने फिर कौनसी साँस पसंद
नही करेगी वापस बाहर आना
आवो मेरे सहयात्री बनाये
हर साँस को मंजर ये सुहाना

अनजाने सफर मे अनजाना डगर है
मंझिल से मै अनजाना
पुर्वभव के कर्मो कि पोटली हाथमे
तुम संग चल रहा हुँ दिवाना

शुभ अशुभ कर्मो के भवरमे
न जाने कब किसको है गोता खाना
मेरे हमसफर आवो बसा ले
नयनोंमे सपना कोई सुहाना

चलते चलते धर्म पथ वंश
वेल को भि होगा बढाना
क्षणभुंगर इस दुनियाँमे
एक महल भि होगा बनवाना

अगले भव के तैय्यारी मे
न जाने हमको कब है उड जाना
मेरे हमसफर आवो बाकी है
अभी सहजिवन सफल बनाना

विलास जैन

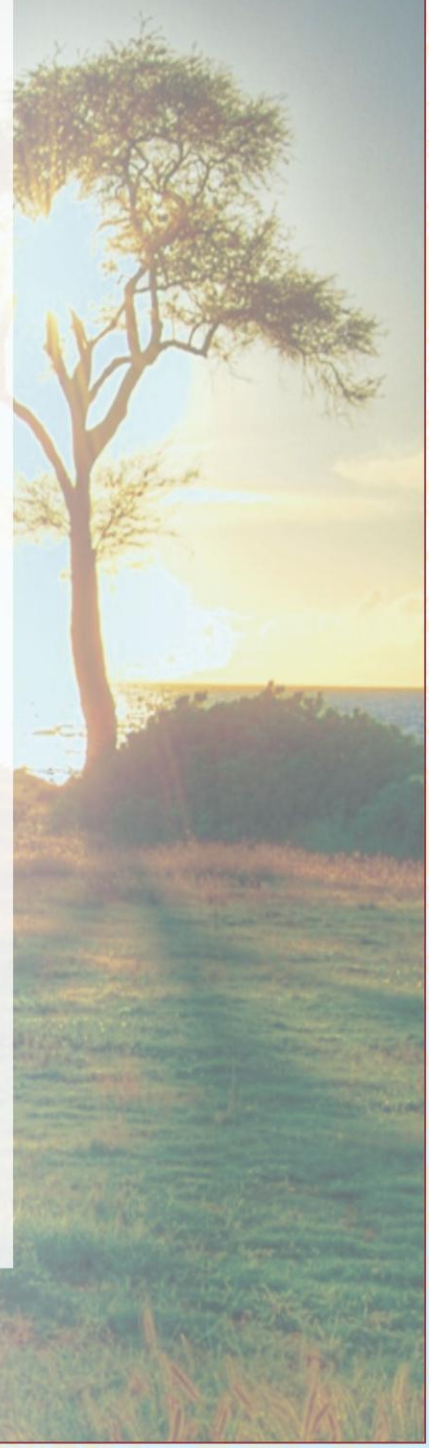

मनमानी

मन के चलते जो चले
उसके भवसागर को नही कोई तिर
मनमानी करके मर गये
रावण जैसे अतिवीर

मन के उपर जिसका नही कोई अकुंश
जग जितने के बाद भि रहे नही वो खुश
भटक भटक के मर गये
सिकंदर जैसे योद्धाधिश

जो तन मन के वशिभुत हो
उसका ना पुछो हाल
एक एक करके मर गये
निगल गया कौरवोंको काल

तिर तलवार का मारे बच सके
मन का मारे न मांगे निर
घुट घुट के मर जाये
क्षुधा न घटे ना घटे पिर

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

दिल चाहता है

दिल चाहता है महकता
आँचल लिये करे कोई इंतजार
ले चले मुझे अपने संग
दुनियाँ के उस पार

जहाँ जिवन लगे एक निर्मल,
सुंदर और सुखद एहसास
सुंदर उसकी आँखे निहारे
मुझे जगाये नये आत्मविश्वास

छुपाले वह मुझे
महकते आँचल मे
भुल जाऊ मै अपने को
डुबोकर इस प्यारे सागर मे

कोमल होथों का उसका
जादु संजिवनी समान
फिरा कर सारे शरीर पर
करे नवचैतन्य का निर्मान

मधुर उसकी वाणी
समर्पण कि उसकी भाषा
जिवन को दे जिने कि
अनेक आशा

अपनत्व, आदर, प्रेम का
करे हर पल वह इजहार
उसका मुझपर इतराना देखकर
जिवन बने सुखकर

जिवनसे भरी उसकी आँखे और
शरारत भरी कोमल भावना
बन जाये जिवन प्रेरणा

जिवनके हर मोड पर
बाँहे फैलाये वह मुझको
दे मधुर मिलनका आमंत्रण
नस नस मे भरदे प्राण
कर दे पुर्ण मेरा जिवन

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

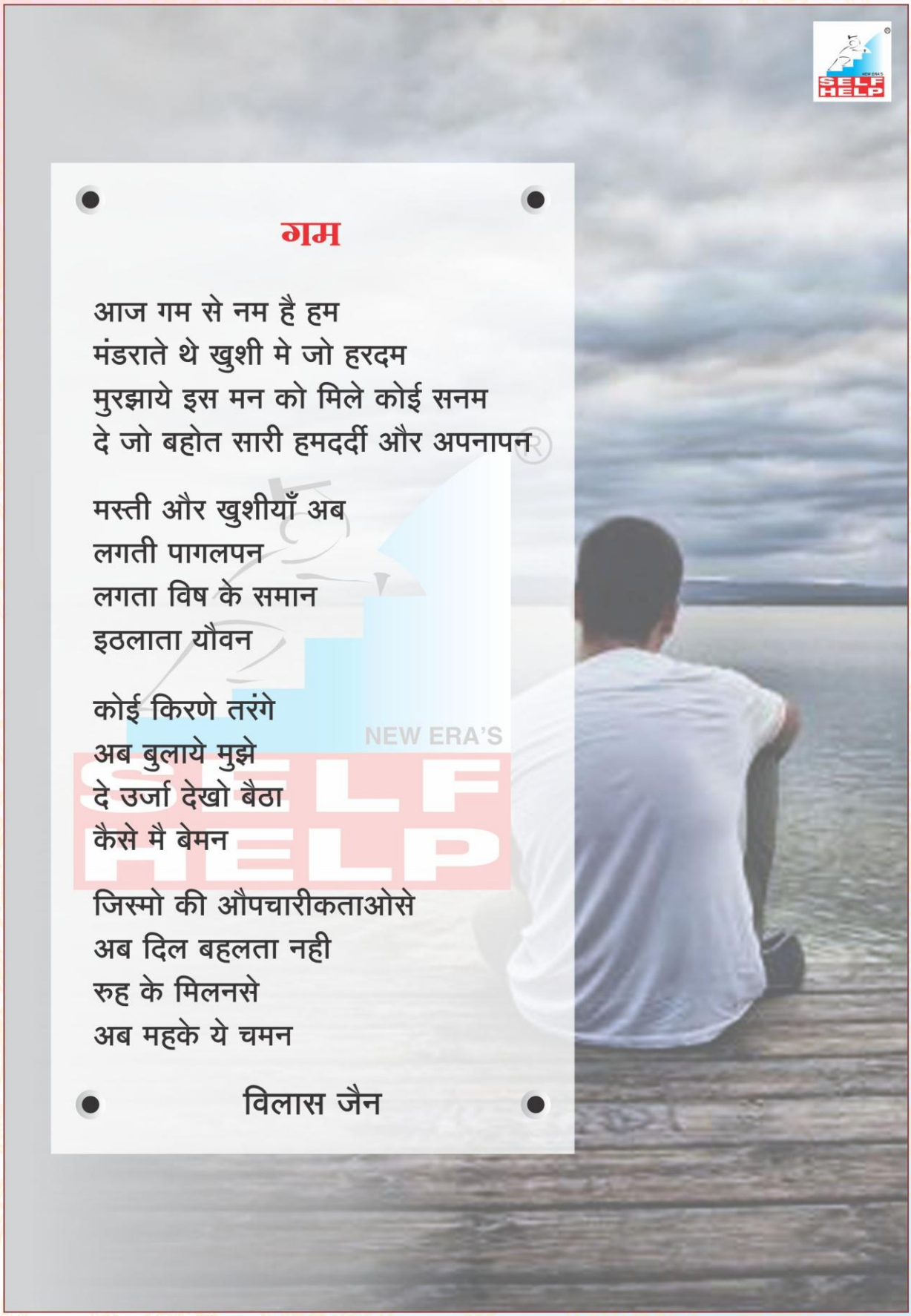

गम

आज गम से नम है हम
मंडराते थे खुशी मे जो हरदम
मुरझाये इस मन को मिले कोई सनम
दे जो बहोत सारी हमदर्दी और अपनापन

मस्ती और खुशीयाँ अब
लगती पागलपन
लगता विष के समान
इठलाता यौवन

कोई किरणे तरंगे
अब बुलाये मुझे
दे उर्जा देखो बैठा
कैसे मै बेमन

जिस्मो की औपचारीकताओसे
अब दिल बहलता नही
रुह के मिलनसे
अब महके ये चमन

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

मै कसाई की गाय

मै कसाई की गाय
नही चाहीये मुझे कोई न्याय
पर्वा नही मुझे जिनेकी
कल कटे या आज कट जाय

ना पर्वा पेट के बच्चो की
बस काटने वालो के घर बस जाय
काटे बिना नही जी सकता जमाना
तो नही मेरी कोई बददुवाँ ना हाय

हमदर्दी, सहानभुती प्रेम की मुझे आदत नही
बस कोई दुध तो कोई मेरी बछडी ले जाय
या भटकने दे मुझे बिच चौराहेपर
या बिच बाजार कोई बेच जाय

काट लेना पुरा मास
नही निकलेगी मुँह से मेरे उफ या हाय
निपट लेना हड्डीयों से पुरा मास
देखो फिर ये हड्डीयाँ भी बिक जाय

विलास जैन

प्रार्थना

(कृपा करना)

आँखे दि है तो – तेरा दिव्य स्वरुप भि दिखाना
कान दिये है तो – आशाभरी बातें सुनवाना
मुँह दिया है तो – तेरा गुनगान भि करवाना
हाथ दिये है तो – शुभ काम भि दे देना
पाँव दिये है तो – मंझिल भि दे देना
पेट दिया है तो – दुसरो के भेट भरनेकी चिंता भी देना
हृदय दिया है तो – दुसरो के प्रती संवेदना भि देना
मन दिया है तो – भावना भि देना
दिमाग दिया है तो – दुसरो का भला करवाना
नाक दि है तो – साँसो के प्रती कृतज्ञ करवाना
जिवन दिया है तो – उसका लक्ष पुरा करवाना
आत्मा दि है तो – उसका प्रक्षीक्षण भि करवाना

हे भगवान जिस इरादेसे तुने शरिर के सब अंग दिये है,
उनसे वो काम जरुर करवाना ।

विलास जैन

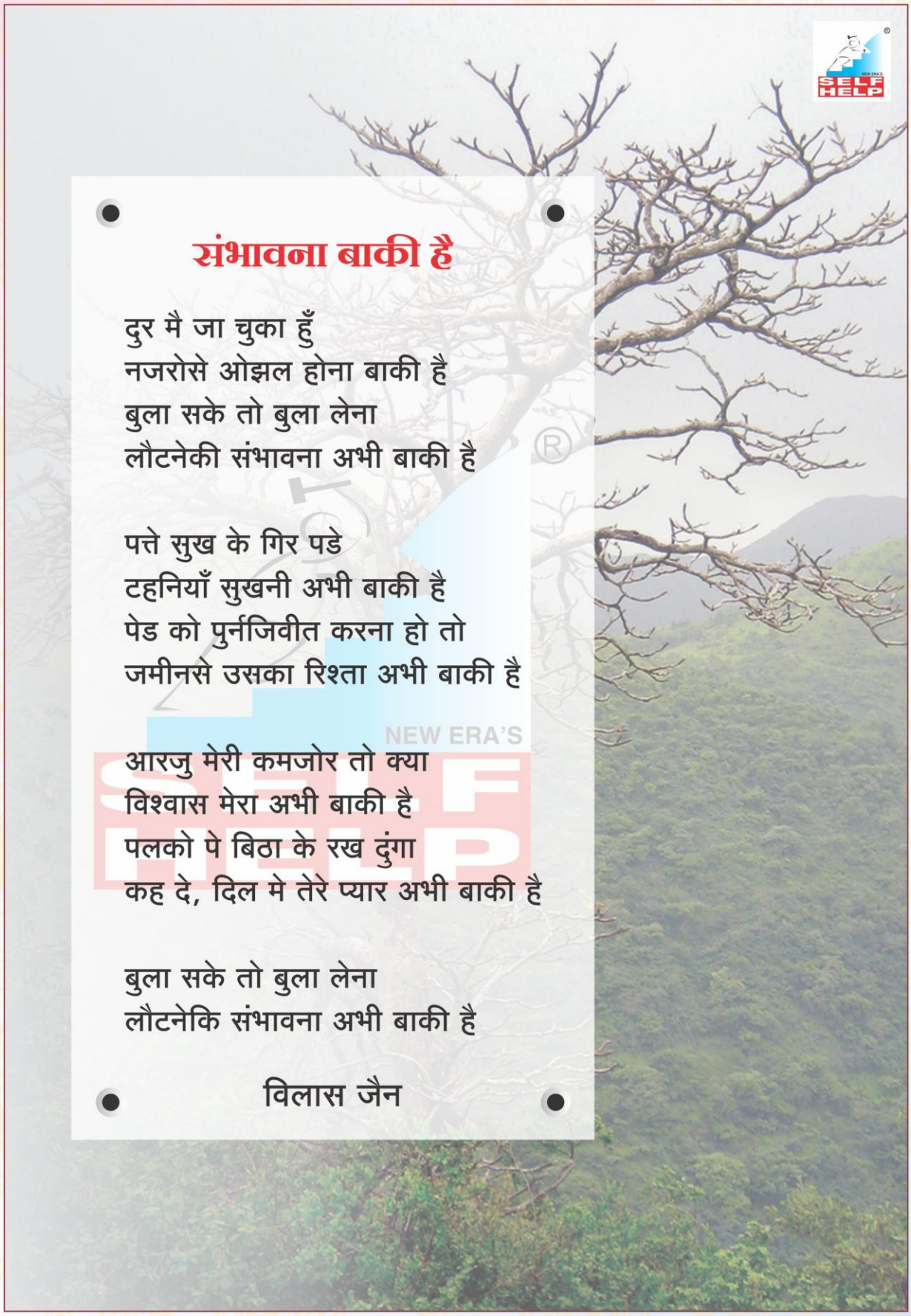

संभावना बाकी है

दुर मै जा चुका हुँ
नजरोसे ओझल होना बाकी है
बुला सके तो बुला लेना
लौटनेकी संभावना अभी बाकी है

पत्ते सुख के गिर पडे
टहनियाँ सुखनी अभी बाकी है
पेड को पुर्नजिवीत करना हो तो
जमीनसे उसका रिश्ता अभी बाकी है

आरजु मेरी कमजोर तो क्या
विश्वास मेरा अभी बाकी है
पलको पे बिठा के रख दुंगा
कह दे, दिल मे तेरे प्यार अभी बाकी है

बुला सके तो बुला लेना
लौटनेकि संभावना अभी बाकी है

विलास जैन

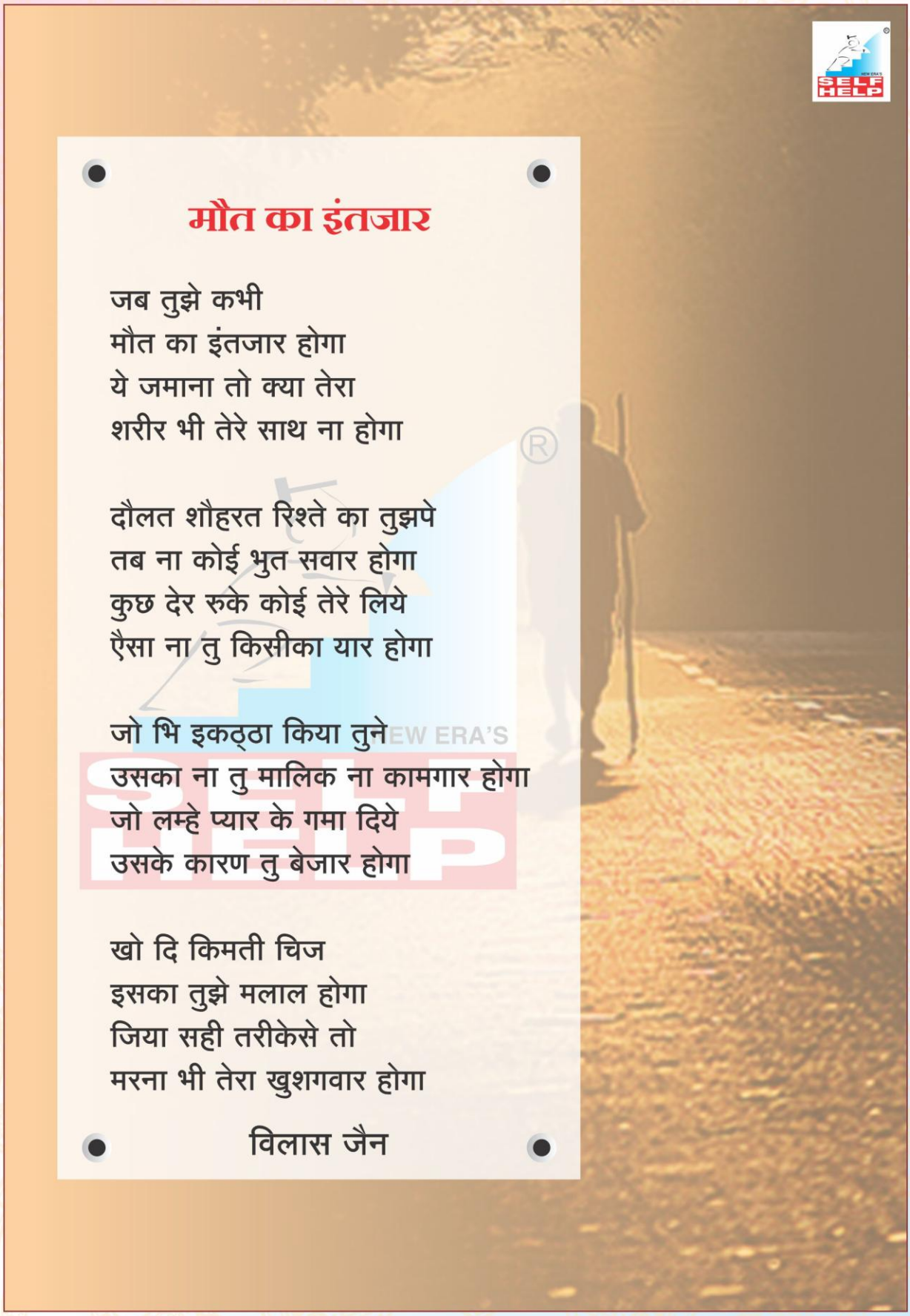

मौत का इंतजार

जब तुझे कभी
मौत का इंतजार होगा
ये जमाना तो क्या तेरा
शरीर भी तेरे साथ ना होगा

दौलत शौहरत रिश्ते का तुझपे
तब ना कोई भुत सवार होगा
कुछ देर रुके कोई तेरे लिये
ऐसा ना तु किसीका यार होगा

जो भि इकठ्ठा किया तुने
उसका ना तु मालिक ना कामगार होगा
जो लम्हे प्यार के गमा दिये
उसके कारण तु बेजार होगा

खो दि किमती चिज
इसका तुझे मलाल होगा
जिया सही तरीकेसे तो
मरना भी तेरा खुशगवार होगा

विलास जैन

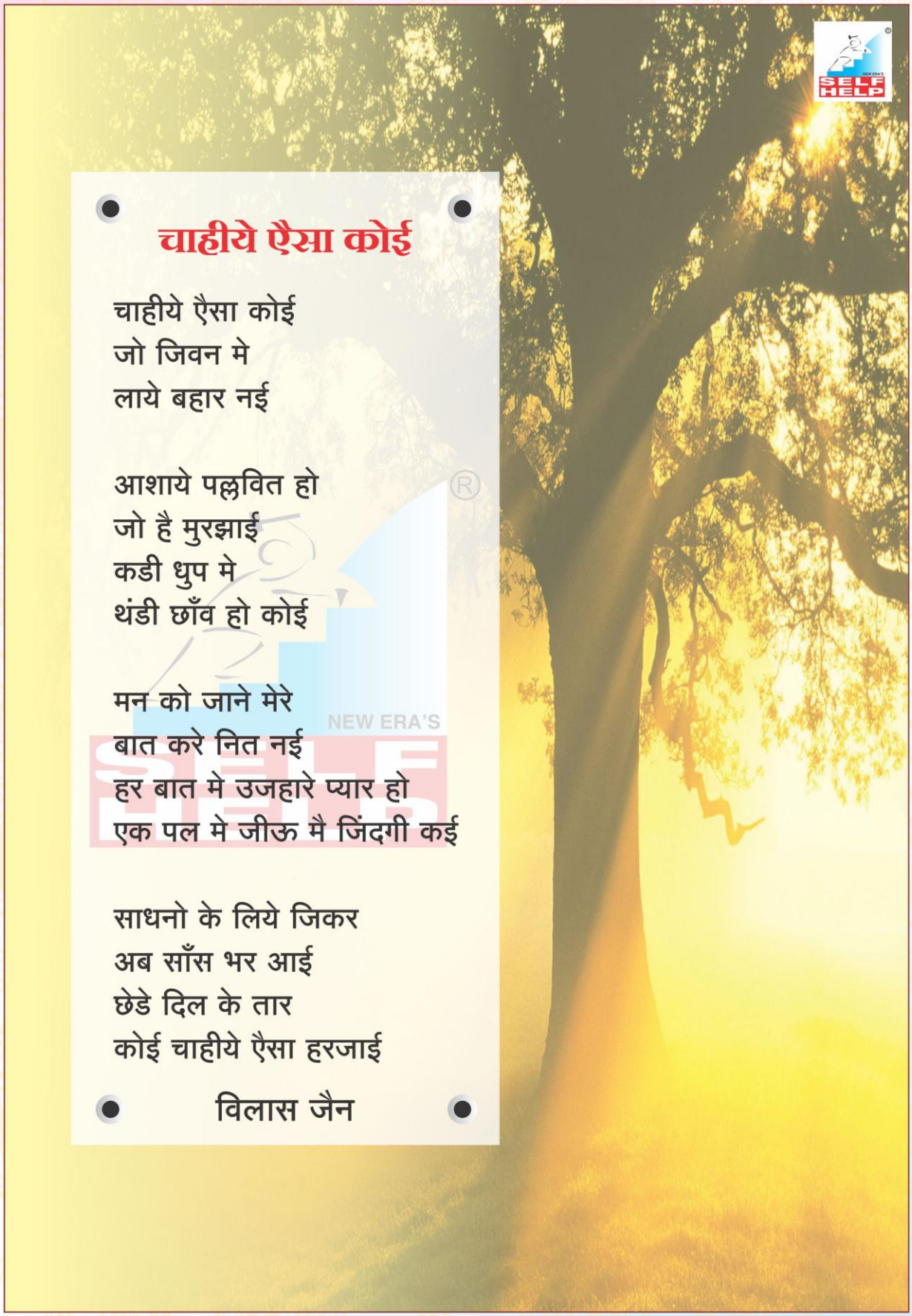

चाहीये ऐसा कोई

चाहीये ऐसा कोई
जो जिवन मे
लाये बहार नई

आशाये पल्लवित हो
जो है मुरझाई
कडी धुप मे
थंडी छाँव हो कोई

मन को जाने मेरे
बात करे नित नई
हर बात मे उजहारे प्यार हो
एक पल मे जीऊ मै जिंदगी कई

साधनो के लिये जिकर
अब साँस भर आई
छेडे दिल के तार
कोई चाहीये ऐसा हरजाई

विलास जैन

हमारे मराठी एवं हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
हारे हुये व्यक्ती को प्रोत्साहीत करने प्रेरणात्मक
सुविचार, शेरो शायरी, दोहे

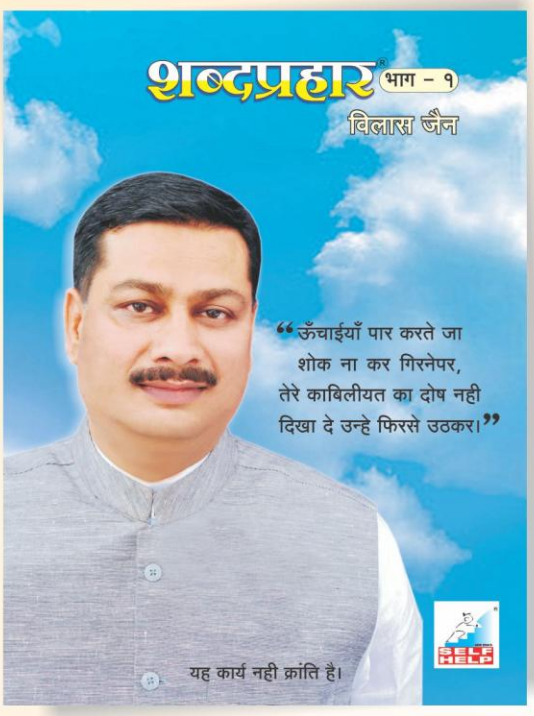

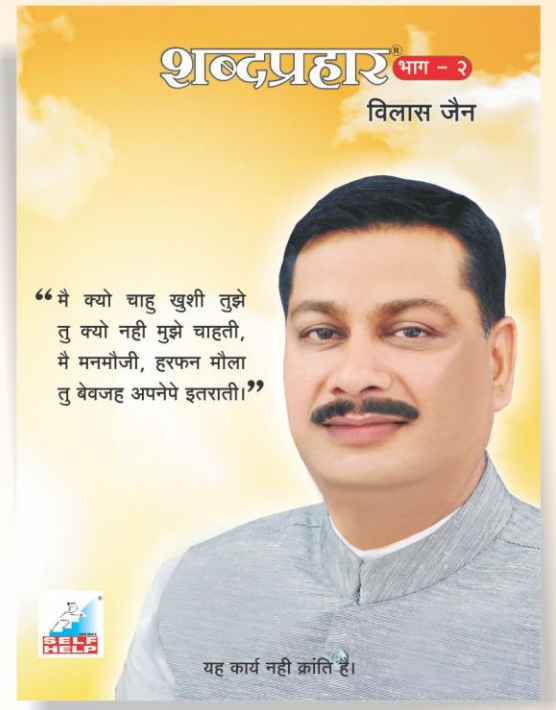

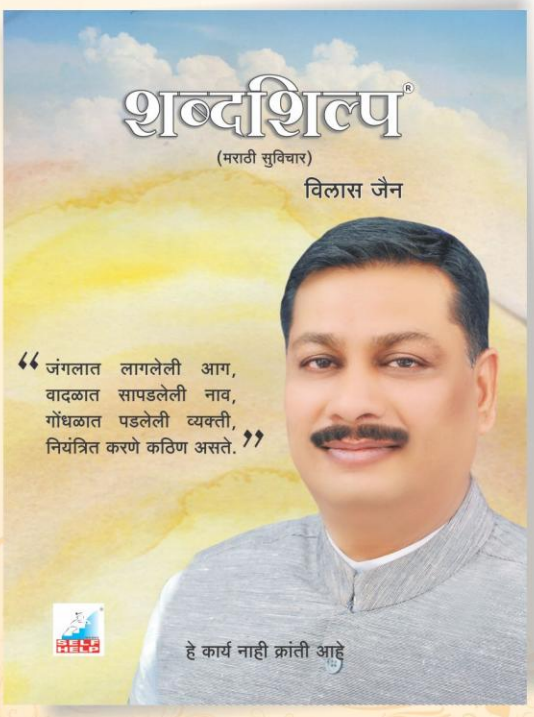

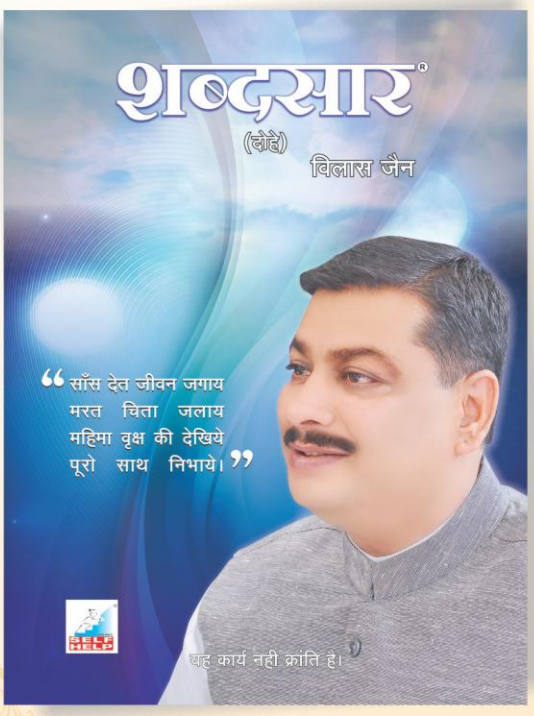

यह कार्य नही क्रांती है।

शब्दांमृत®(हिंदी)

जीवन कि तरफ देखने का नजरीयाँ देने वाली
कविताओंका संग्रह

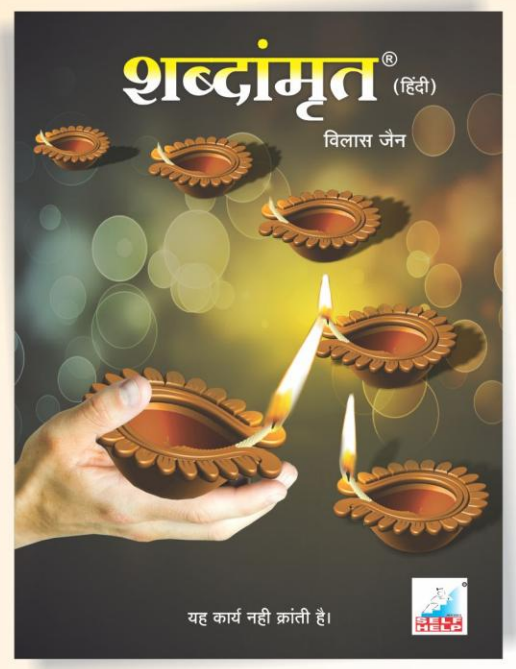

शब्दांमृत®(मराठी)

मराठी भाषी समाजपयोगी साहित्य हारे हुये व्यक्ती को
प्रोत्साहीत करने के लिए कविताओं का संग्रह

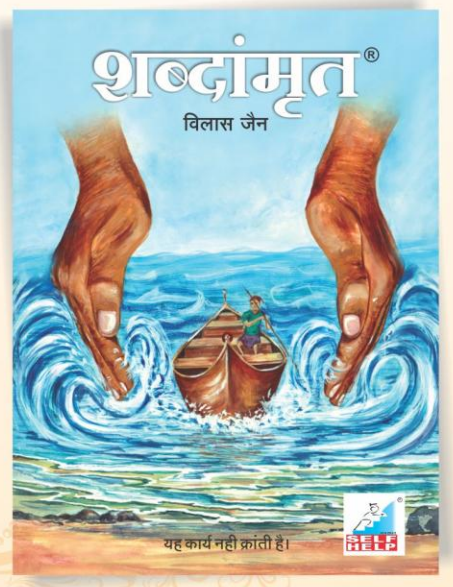

यह कार्य नही क्रांती है।

हमारे हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
बच्चोंके मनपर संस्कार ड़ालनेके लिए
२५ कविताओं के संग्रह **नव निर्माण®** के चार भाग

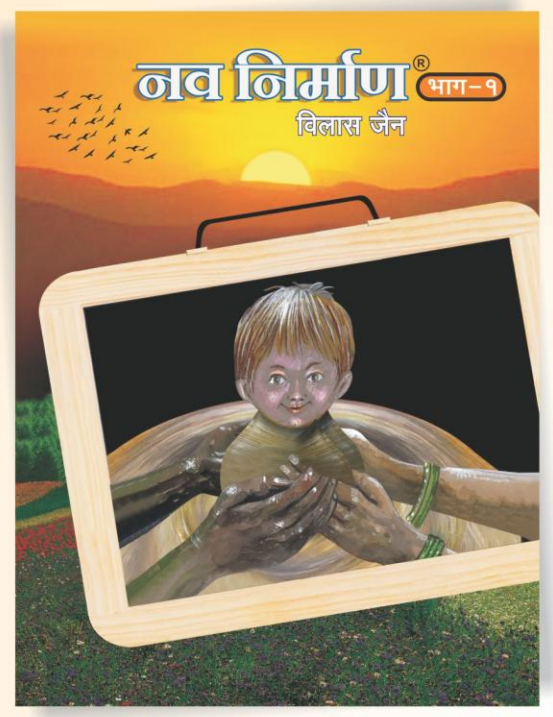

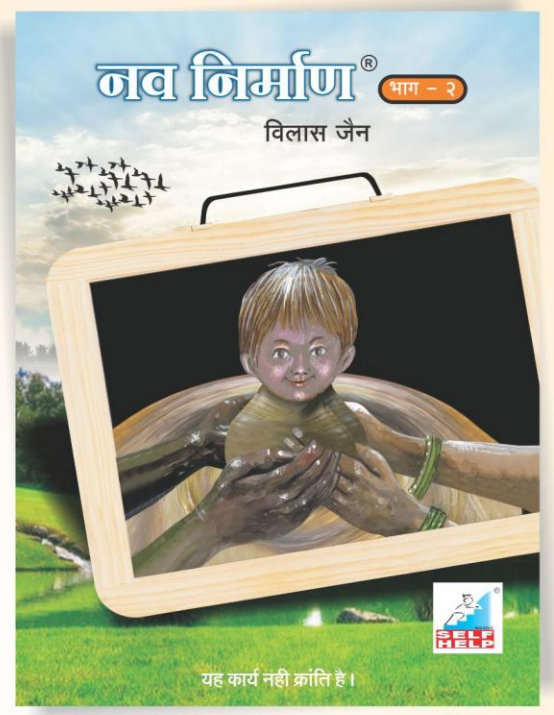

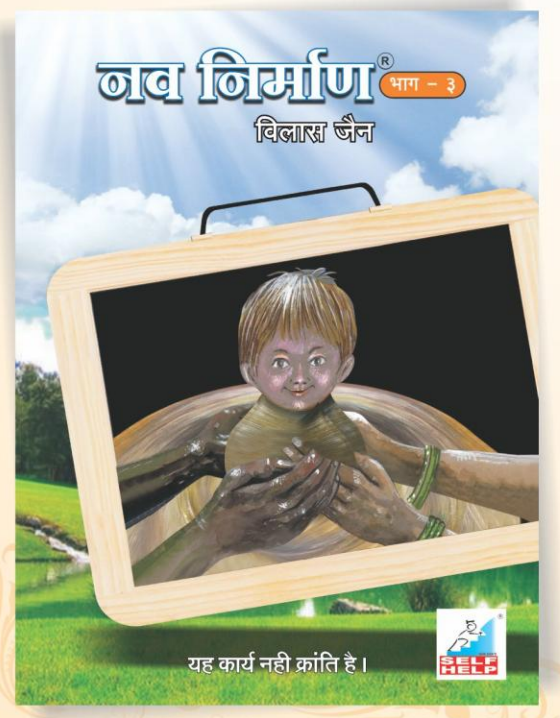

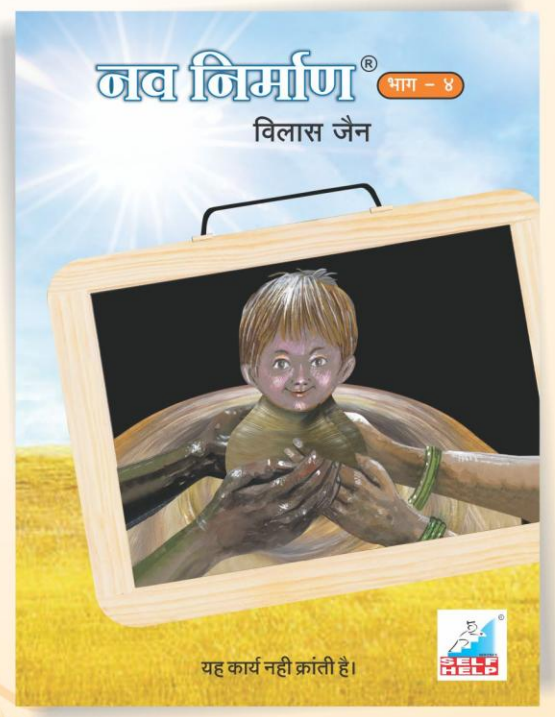

यह कार्य नही क्रांती है।

शब्दांमृत® (मराठी)

मराठी भाषीक समाजपयोगी साहित्य हारे हुये व्यक्ती को
प्रोत्साहीत करने के लिए कविताओं का
आगामी संग्रह

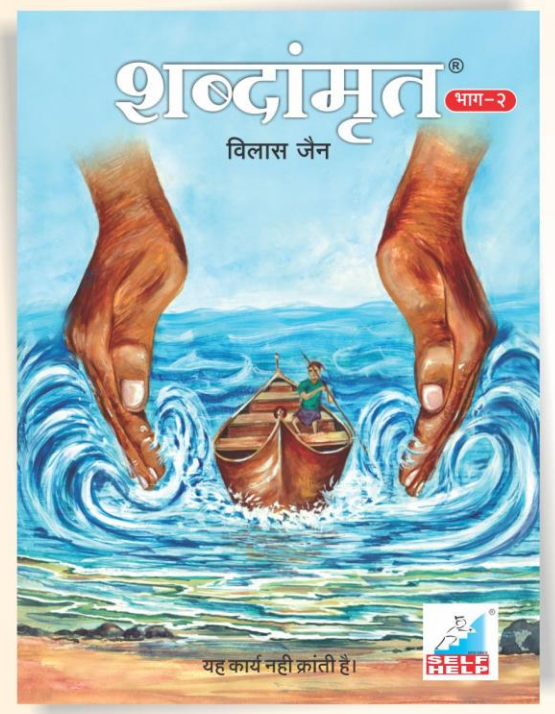

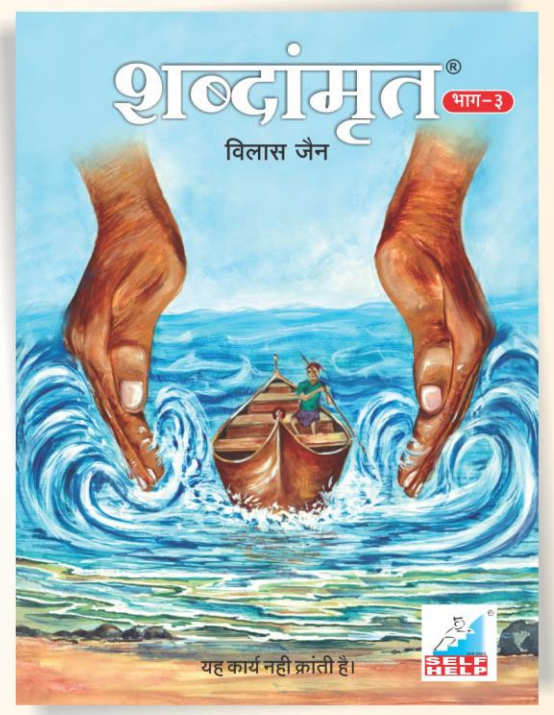

यह कार्य नही क्रांती है।

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे है ।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर है ।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करते है ।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते है ।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते है ।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते है ।
धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

विशेष आभार :

मेरी धर्मपत्नी सौ. संगीता जैन, एम.ए.(इको.) इनके
जिन्होंने मेरे सभी हिंदी भाषिक किताबो का शुद्धलेखन किया।

यह कार्य नही क्रांती है।

मेरा परिचय

पल पल में बदलते जीवन का
क्या दूं मै अपना परिचय।
पाने से ज्यादा लौटा सकूं
यह मेरा है दृढ़ निश्चय।
शिक्षा, उपाधि, अनुभव
का नही मोहताज किसी का
अच्छा मनोदय।
लुप्त हो कुप्रथा और बुरी आदतें
सुंदर, सुदृढ़, समाज का
हो उदय।
अथक प्रयास और ध्येय से
रचा कितना सुंदर देखो मेरा परिणय।
कविताओं से निकले अर्थ के सिवा
नहीं मेरा कोई दूसरा परिचय।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

कीमत : १००/-

यह कार्य नही क्रांती है।